UP Board Class 12 Hindi General 2026 (Set 302 BI) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It has multiple-choice questions as well as questions that need a written answer.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). हिन्दी का पहला पत्र है

(A) 'उदंत मार्तण्ड'

(B) 'हिन्दी प्रदीप'

(C) 'आनंद कादंबिनी'

(D) 'कविवचन सुधा'

Correct Answer: (A) 'उदंत मार्तण्ड'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
हमें हिन्दी का सबसे पहला समाचार-पत्र पहचानना है।

चरण 2: तथ्य:
हिन्दी का पहला पत्र 'उदंत मार्तण्ड' है। यह साप्ताहिक पत्र 30 मई 1826 को कलकत्ता से निकला। इसके संपादक पं. जुगलकिशोर शुक्ल थे। आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह लगभग डेढ़ वर्ष में बंद हो गया।

चरण 3: अन्य विकल्प:

(B) 'हिन्दी प्रदीप' को बालकृष्ण भट्ट ने 1877 में निकाला।
(C) 'आनंद कादंबिनी' बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की पत्रिका थी।
(D) 'कविवचन सुधा' भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1867 में शुरू की। ये सब बाद के पत्र हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) 'उदंत मार्तण्ड' है।

1(b). 'कंकाल' उपन्यास के लेखक हैं

(A) प्रेमचंद
(B) चतुरसेन शास्त्री
(C) विश्वंभरनाथ शर्मा
(D) जयशंकर प्रसाद

Correct Answer: (D) जयशंकर प्रसाद

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'कंकाल' एक उपन्यास है। इसके लेखक का नाम चुनना है।

चरण 2: तथ्य:
'कंकाल' जयशंकर प्रसाद का सामाजिक उपन्यास है, जो 1929 में प्रकाशित हुआ। इसमें धर्म के नाम पर चलने वाले पाखंड और समाज की कुरीतियों का चित्रण है। प्रसाद के दूसरे उपन्यास 'तितली' और 'इरावती' (अधूरा) हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) प्रेमचंद ने 'सेवासदन', 'गोदान' आदि उपन्यास लिखे।
(B) चतुरसेन शास्त्री 'वैशाली की नगरवधू' के लेखक हैं।
(C) विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' मुख्य रूप से कहानीकार हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) जयशंकर प्रसाद है।

1(c). 'चिंतामणि' रचना की विधा है

(A) निबंध

(B) नाटक

(C) कहानी

(D) उपन्यास

Correct Answer: (A) निबंध

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'चिंतामणि' किस साहित्यिक विधा की रचना है, यह बताना है।

चरण 2: तथ्य:
'चिंतामणि' आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों का संग्रह है। इसमें 'क्रोध', 'लज्जा और ग्लानि', 'करुणा', 'लोभ और प्रीति', 'कविता क्या है' जैसे मनोवैज्ञानिक और आलोचनात्मक निबंध हैं। इन्हें हिन्दी निबंध की श्रेष्ठ कृति माना जाता है।

चरण 3: विकल्पों की जाँच:
(A) निबंध: सही विधा है।
(B) नाटक, (C) कहानी और (D) उपन्यास: 'चिंतामणि' में न पात्रों का संवाद है और न कोई कथा। इसलिए ये गलत हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) निबंध है।

1(d). 'कल्पलता' के लेखक हैं

(A) भारतेंदु

(B) हजारीप्रसाद द्विवेदी

(C) यशपाल

(D) 'अज्ञेय'

Correct Answer: (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'कल्पलता' के लेखक का नाम चुनना है।

चरण 2: तथ्य:
'कल्पलता' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का निबंध-संग्रह है। द्विवेदी जी के अन्य निबंध-संग्रह 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क' और 'कुटज' हैं। उनके उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और 'पुनर्नवा' हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) भारतेंदु के नाटक 'अंधेर नगरी' और 'भारत दुर्दशा' प्रसिद्ध हैं।
(C) यशपाल ने 'झूठा सच' और 'दिव्या' जैसे उपन्यास लिखे।
(D) 'अज्ञेय' की पहचान 'शेखर: एक जीवनी' और 'आँगन के पार द्वार' से है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) हजारीप्रसाद द्विवेदी है।

1(e). 'गुलाबराय' लेखक हैं

(A) भारतेंदु-युग के

(B) शुक्ल-युग के

(C) द्विवेदी-युग के

(D) शुक्लोत्तर-युग के

Correct Answer: (B) शुक्ल-युग के

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
गुलाबराय (1888-1963) किस युग के लेखक हैं, यह बताना है।

चरण 2: तथ्य:
गुलाबराय हिन्दी के प्रसिद्ध निबंधकार और आलोचक थे। 'ठलुआ क्लब', 'मेरी असफलताएँ' और 'नवरस' उनकी रचनाएँ हैं। उनका लेखन आचार्य रामचंद्र शुक्ल के समय में हुआ, इसलिए वे शुक्ल-युग (लगभग 1919 से 1938) के माने जाते हैं।

चरण 3: गलत विकल्प:
(A) भारतेंदु-युग में भारतेंदु और प्रतापनारायण मिश्र जैसे लेखक आते हैं।
(C) द्विवेदी-युग के प्रमुख लेखक महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं।
(D) शुक्लोत्तर-युग में हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे लेखक आते हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) शुक्ल-युग के है।

2(a). 'तारसप्तक' के कवि हैं

(A) रामविलास शर्मा

(B) रामकुमार वर्मा

(C) धीरेन्द्र वर्मा

(D) महादेवी वर्मा

Correct Answer: (A) रामविलास शर्मा

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'तारसप्तक' में सम्मिलित कवियों में से एक का नाम चुनना है।

चरण 2: तथ्य:
'तारसप्तक' (1943) अज्ञेय के संपादन में निकला प्रयोगवादी कविताओं का संकलन है। इसके सात कवि हैं: अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर और रामविलास शर्मा।

चरण 3: विकल्पों की जाँच:
(A) रामविलास शर्मा: तारसप्तक के कवि हैं, इसलिए सही उत्तर है।
(B) रामकुमार वर्मा: एकांकीकार और कवि हैं, तारसप्तक में नहीं।
(C) धीरेन्द्र वर्मा: भाषाविद् और इतिहासकार हैं।
(D) महादेवी वर्मा: छायावादी कवयित्री हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) रामविलास शर्मा है।

2(b). 'उर्वशी' रचना है

(A) रामधारी सिंह 'दिनकर' की

(B) हरिवंश राय 'बच्चन' की

(C) माखनलाल चतुर्वेदी की

(D) मैथिलीशरण गुप्त की

Correct Answer: (A) रामधारी सिंह 'दिनकर' की

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह जानना है कि 'उर्वशी' किस रचनाकार की कृति है।

चरण 2: सही लेखक की पहचान:
'उर्वशी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का प्रसिद्ध काव्य-नाटक है। इसका प्रकाशन 1961 में हुआ। इसमें राजा पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी के प्रेम की कथा है। इसी रचना पर दिनकर जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार (1972) मिला।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(B) हरिवंश राय 'बच्चन' की प्रसिद्ध रचना 'मधुशाला' है।
(C) माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ 'हिमकिरीटिनी' और 'हिमतरंगिनी' हैं।
(D) मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ 'साकेत' और 'यशोधरा' हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) रामधारी सिंह 'दिनकर' की है।

2(c). 'सांध्यगीत' काव्य-संकलन है

(A) 'दिनकर' का

(B) 'निराला' का

(C) सुमित्रानन्दन पन्त का

(D) महादेवी वर्मा का

Correct Answer: (D) महादेवी वर्मा का

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'सांध्यगीत' नामक काव्य-संकलन के रचयिता को पहचानना है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
'सांध्यगीत' महादेवी वर्मा का काव्य-संग्रह है। यह 1936 में प्रकाशित हुआ। इसमें वेदना, विरह और आत्मा-परमात्मा के मिलन की भावना के गीत हैं। महादेवी जी छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) दिनकर की रचनाएँ 'रेणुका', 'हुंकार' और 'उर्वशी' हैं।
(B) निराला की रचनाएँ 'परिमल', 'अनामिका' और 'गीतिका' हैं।
(C) पन्त की रचनाएँ 'पल्लव', 'गुंजन' और 'ग्राम्या' हैं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (D) महादेवी वर्मा का है।

2(d). 'बसंती हवा' कविता है

(A) केदारनाथ अग्रवाल की

(B) त्रिलोचन शास्त्री की

(C) नागार्जुन की

(D) केदारनाथ सिंह की

Correct Answer: (A) केदारनाथ अग्रवाल की

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'बसंती हवा' कविता के कवि का नाम बताना है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
'बसंती हवा' प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल की प्रसिद्ध कविता है। इसकी पंक्ति है: 'हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ'। इसमें मस्ती, स्वच्छन्दता और प्रकृति के उल्लास का चित्रण है। यह कविता उनके संग्रह 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' से जुड़ी है।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(B) त्रिलोचन शास्त्री सॉनेट और 'धरती' जैसी रचनाओं के लिए जाने जाते हैं।
(C) नागार्जुन की पहचान 'बादल को घिरते देखा है' जैसी कविताओं से है।
(D) केदारनाथ सिंह की प्रसिद्ध कविता 'बाघ' है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) केदारनाथ अग्रवाल की है।

2(e). जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य है

(A) 'झरना'

(B) 'लहर'

(C) 'कामायनी'

(D) 'आँसू'

Correct Answer: (C) 'कामायनी'

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में से महाकाव्य चुनना है।

चरण 2: सही उत्तर का कारण:
'कामायनी' (1936) प्रसाद जी का महाकाव्य है। इसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा की कथा के द्वारा मानव-मन के विकास का प्रतीकात्मक चित्रण है। इसमें 15 सर्ग हैं, जैसे चिन्ता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना और आनन्द। यह छायावाद की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है।

चरण 3: गलत विकल्पों की जाँच:
(A) 'झरना' (1918) प्रसाद जी का काव्य-संग्रह है।
(B) 'लहर' (1933) भी उनका स्फुट कविताओं का संग्रह है।
(D) 'आँसू' (1925) एक विरह-काव्य है, महाकाव्य नहीं।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) 'कामायनी' है।

3(i). *गद्यांश:* यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिर जीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के संबंध को स्वीकार करता है, उसे पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है।

(i) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: पाठ का शीर्षक:
यह गद्यांश 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक निबन्ध से लिया गया है। इसमें लेखक ने भूमि, जन और संस्कृति के मेल से राष्ट्र का स्वरूप समझाया है।

चरण 2: लेखक का नाम:
इस निबन्ध के लेखक डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल हैं। वे भारतीय संस्कृति, पुरातत्त्व और कला के प्रसिद्ध विद्वान थे।

उत्तर:
शीर्षक: राष्ट्र का स्वरूप। लेखक: वासुदेवशरण अग्रवाल।

3(ii). *गद्यांश:* यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिर जीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के संबंध को स्वीकार करता है, उसे पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह अंश वासुदेवशरण अग्रवाल के निबन्ध 'राष्ट्र का स्वरूप' से लिया गया है। इसमें लेखक ने भूमि और उसके निवासियों के सम्बन्ध को माता और पुत्र का सम्बन्ध बताया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
वरदान: पृथ्वी से मिलने वाले अन्न, जल, रत्न आदि उपहार। अनुराग: गहरा प्रेम। निष्कारण धर्म: बिना किसी स्वार्थ के निभाया जाने वाला कर्तव्य।

चरण 3: व्याख्या:
लेखक कहते हैं कि जो मनुष्य पृथ्वी को अपनी माता और स्वयं को उसका पुत्र मानता है, वही उसकी सम्पदा का सच्चा अधिकारी है। जैसे माता पुत्र का पालन करती है, वैसे ही पृथ्वी अपने अन्न, जल, खनिज और रत्न देकर जन का पोषण करती है। बदले में पुत्र का कर्तव्य है कि वह माता से प्रेम करे और उसकी सेवा करे। यह प्रेम किसी लाभ की आशा से नहीं, स्वाभाविक भाव से होना चाहिए। इसलिए इसे निष्कारण धर्म कहा गया है।

चरण 4: विशेष:
भाषा तत्सम-प्रधान और गम्भीर है। शैली विचारात्मक है। 'माता-पुत्र' का रूपक इस सम्बन्ध को सरल बना देता है।

3(iii). *गद्यांश:* यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिर जीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के संबंध को स्वीकार करता है, उसे पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है।

(iii) पृथ्वी के रत्नों को वरदानों को कौन प्राप्त कर सकता है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश से उत्तर खोजें:
गद्यांश में लिखा है कि जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है।

चरण 2: व्याख्या:
जो व्यक्ति भूमि को माता मानकर उसका आदर करता है और पुत्र की तरह उसकी सेवा करता है, वही पृथ्वी के रत्न और वरदान प्राप्त कर सकता है।

अंतिम उत्तर:
पृथ्वी के वरदानों को वही मनुष्य पा सकता है जो पृथ्वी को माता और स्वयं को उसका पुत्र मानता है।

3(iv). *गद्यांश:* यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिर जीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के संबंध को स्वीकार करता है, उसे पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है।

(iv) कैसे व्यक्ति राष्ट्र का उत्थान नहीं कर सकते?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश का संकेत:
गद्यांश के अन्तिम वाक्य में कहा गया है कि स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम उसके अधःपतन का सूचक है।

चरण 2: विचार:
जो लोग भूमि को माता नहीं मानते, उसकी सेवा नहीं करते और केवल अपने लाभ के लिए देश से जुड़ते हैं, वे राष्ट्र की नींव को मजबूत नहीं कर सकते। ऐसे लोगों में निष्काम प्रेम और कर्तव्य-भाव नहीं होता।

अंतिम उत्तर:
स्वार्थी लोग, जो भूमि के प्रति सेवा और अनुराग नहीं रखते, राष्ट्र का उत्थान नहीं कर सकते।

3(v). *गद्यांश:* यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है। इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है। इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिर जीवन आश्रित रहता है। इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के संबंध को स्वीकार करता है, उसे पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है। माता के प्रति अनुराग और सेवाभाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। वह एक निष्कारण धर्म है। स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है।

(v) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: गद्यांश का केन्द्रीय भाव:
लेखक का कहना है कि भूमि और जन का सम्बन्ध माता और पुत्र का है। इस सम्बन्ध का आधार प्रणाम-भाव, अर्थात् भूमि के प्रति श्रद्धा और आदर है। राष्ट्र का पूरा भवन इसी दृढ़ नींव पर खड़ा होता है।

चरण 2: सन्देश:
हमें अपनी मातृभूमि को माता के समान पूजनीय मानना चाहिए। उससे प्रेम और उसकी सेवा हमारा स्वाभाविक कर्तव्य है। उसके वरदानों पर अधिकार तभी बनता है जब हम कर्तव्य निभाएँ। यह प्रेम निःस्वार्थ होना चाहिए, क्योंकि स्वार्थ के लिए किया गया प्रेम मनुष्य के पतन का कारण बनता है।

निष्कर्ष:
गद्यांश का सन्देश है कि निःस्वार्थ भाव से मातृभूमि की सेवा ही सच्चा राष्ट्र-धर्म है।

OR

3(i). *गद्यांश:* अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुंदरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ-गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कंधों पर से ही फूट उठता था।

(i) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
दिए गए गद्यांश के पाठ का शीर्षक और उसके लेखक का नाम बताना है।

चरण 2: पहचान:

अशोक के वृक्ष, उसके फूलों और कालिदास द्वारा उसे दिए गए सम्मान की चर्चा इसी निबन्ध में है। यह अंश ललित निबन्ध 'अशोक के फूल' से लिया गया है।
इस निबन्ध के लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं। वे हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार, उपन्यासकार और आलोचक थे।

अंतिम उत्तर:
पाठ का शीर्षक: अशोक के फूल। लेखक: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

3(ii). *गद्यांश:* अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुंदरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ-गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कंधों पर से ही फूट उठता था।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के ललित निबन्ध 'अशोक के फूल' से लिया गया है।

चरण 2: शब्दार्थ:
क्षोभ = हलचल, बेचैनी।
चित्त = मन।
भ्रम = धोखा, गलत समझ लेना।
मनोजन्मा देवता = कामदेव।

चरण 3: व्याख्या:
लेखक कहते हैं कि अशोक का फूल अपनी सुन्दरता से बड़े-बड़े देवताओं और

महापुरुषों को भी प्रभावित कर देता था। उसे देखकर तपस्या में लीन महादेव का मन भी चंचल हो उठता था।
वनवास में सीता से बिछड़े श्रीराम को अशोक के लाल फूलों में सीता की झलक दिखाई देती थी और उनके मन में सीता का भ्रम उत्पन्न हो जाता था।
कामदेव के संकेत पर अशोक वृक्ष अपने तने के ऊपरी भाग, अर्थात कंधों से ही फूलों से लद जाता था। यहाँ कंधे का अर्थ तने का ऊपरी भाग है।

चरण 4: विशेष:
इस अंश में अशोक को प्रेम और सौन्दर्य के उद्दीपक के रूप में दिखाया गया है। भाषा तत्सम शब्दों से भरी हुई और भावपूर्ण है।

3(iii). *गद्यांश:* अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुंदरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ-गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कंधों पर से ही फूट उठता था।

(iii) 'आसिंजनकारी' तथा 'कर्णावतंस' शब्दों का अर्थ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
गद्यांश में आए दो कठिन शब्दों 'आसिंजनकारी' और 'कर्णावतंस' का अर्थ लिखना है।

चरण 2: आसिंजनकारी:
आसिंजन का अर्थ है मधुर झंकार या ध्वनि। 'आसिंजनकारी' का अर्थ है मधुर झंकार करने वाले। यहाँ यह शब्द सुंदरियों के नूपुर (पायल) के लिए आया है, जो चलने पर मधुर ध्वनि करते हैं।

चरण 3: कर्णावतंस:

कर्ण का अर्थ कान है और अवतंस का अर्थ आभूषण है। इसलिए कर्णावतंस का अर्थ है कान का आभूषण, अर्थात कर्णफूल।

अंतिम उत्तर:
आसिंजनकारी = झंकार करने वाले (नूपुर)। कर्णावतंस = कान का आभूषण।

3(iv). *गद्यांश:* अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुंदरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ-गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कंधों पर से ही फूट उठता था।

(iv) संस्कृत के किस कवि ने अशोक को सम्मानित किया?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
पूछा गया है कि संस्कृत के किस कवि ने अशोक को सम्मान दिया।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:
गद्यांश की पहली पंक्ति में ही लिखा है कि अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था।
कालिदास संस्कृत के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने अपने काव्यों में अशोक के फूल का सुंदर वर्णन किया और उसे प्रेम तथा सौन्दर्य का प्रतीक बनाया।

अंतिम उत्तर:
संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अशोक को सम्मानित किया।

3(v). *गद्यांश:* अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुंदरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ-गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कंधों पर से ही फूट उठता था।

(v) किस फूल की सुन्दरता के कारण सुन्दरियाँ उसे अपने कानों का आभूषण बनाती थीं?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह बताना है कि किस फूल की सुन्दरता के कारण सुंदरियाँ उसे कानों का आभूषण बनाती थीं।

चरण 2: गद्यांश से उत्तर:
गद्यांश के अनुसार अशोक कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था।
कर्णावतंस का अर्थ कान का आभूषण है।
अशोक के फूल अपनी सुन्दरता और लाल-केसरिया रंग के कारण प्रिय थे, इसलिए सुंदरियाँ उन्हें कानों में धारण करती थीं।

अंतिम उत्तर:
अशोक के फूल की सुन्दरता के कारण सुंदरियाँ उसे अपने कानों का आभूषण बनाती थीं।

4(i). *पद्यांश:* कहा आगंतुक ने सस्नेह-
'अरे तुम इतने हुए अधीर!
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मरकर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा-मनु' पाठ से लिया गया है। यह अंश कामायनी के 'श्रद्धा सर्ग' का है।

चरण 2: संक्षिप्त परिचय:
इस पाठ में हिमालय पर अकेले बैठे निराश मनु से श्रद्धा की भेंट होती है। श्रद्धा स्नेह के साथ उन्हें समझाती है और जीवन में आशा जगाती है।

निष्कर्ष:
सन्दर्भ: कामायनी (श्रद्धा सर्ग) के 'श्रद्धा-मनु' पाठ से, कवि जयशंकर प्रसाद।

4(ii). *पद्यांश:* कहा आगंतुक ने सस्नेह-
'अरे तुम इतने हुए अधीर!
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मरकर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रसंग:
जल-प्रलय के बाद मनु हिमालय पर अकेले और निराश बैठे हैं। वहाँ आई श्रद्धा उनकी हताशा देखकर स्नेह से समझाना शुरू करती है। ये पंक्तियाँ उसी समझाने का आरम्भ हैं।

चरण 2: शब्दार्थ:
आगंतुक = आने वाली (श्रद्धा), सस्नेह = प्रेम के साथ, अधीर = बेचैन या घबराया हुआ, दाँव = बाजी, तप = कठोर कष्ट या साधना, क्षणिक = थोड़ी देर का, अवसाद = उदासी, तरल आकांक्षा = कोमल और बहती हुई इच्छा, आह्लाद = आनन्द।

चरण 3: व्याख्या:
श्रद्धा कहती है कि हे मनु, तुम इतने बेचैन क्यों हो गए? तुमने तो जीवन की बाजी ही हार मान ली। जबकि सच्चे वीर मरकर भी उस बाजी को जीत जाते हैं, अर्थात् मृत्यु से पहले हार नहीं मानते। केवल तप और कष्ट ही जीवन का सत्य नहीं है। यह करुण और दीन उदासी तो क्षणभर की है, हमेशा रहने वाली नहीं। इसके भीतर कोमल इच्छाओं से भरा आशा का आनन्द सोया पड़ा है। उसे जगाना ही तुम्हारा काम है।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य:

भाषा तत्सम शब्दों वाली खड़ी बोली है। 'आशा का आह्लाद' में अनुप्रास है। शैली सम्बोधन की है और भाव उपदेशात्मक तथा प्रेरणादायक है।

निष्कर्ष:
दुःख स्थायी नहीं है। मनुष्य को निराशा छोड़कर आशा और कर्म का सहारा लेना चाहिए।

4(iii). *पद्यांश:* कहा आगंतुक ने सस्नेह-
'अरे तुम इतने हुए अधीर!
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मरकर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

(iii) श्रद्धा मनु को प्रेरित करते हुए क्या कहती है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न यह पूछता है कि पद्यांश में श्रद्धा मनु को किस बात के लिए प्रेरित कर रही है। उत्तर पद्यांश से ही देना है।

चरण 2: उत्तर:
श्रद्धा मनु से कहती है कि तुम इतने अधीर क्यों हो गए हो। जीवन की बाजी हारकर बैठ जाना वीरों का काम नहीं है। वह समझाती है कि केवल कष्ट और तप ही जीवन का सत्य नहीं है। उदासी क्षणभर की है और मन में आशा तथा उत्साह छिपा है, उसे जगाओ। इस तरह वह मनु को निराशा छोड़कर उत्साह से कर्म में लगने की प्रेरणा देती है।

अंतिम उत्तर:
श्रद्धा मनु को धैर्य रखने, हताशा त्यागने और आशा के साथ कर्म करने के लिए प्रेरित करती है।

4(iv). *पद्यांश:* कहा आगंतुक ने सस्नेह-
'अरे तुम इतने हुए अधीर!
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मरकर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

(iv) श्रद्धा दुःख को किसके समान मानती है और क्यों?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न पूछता है कि श्रद्धा दुःख को किसके समान मानती है और क्यों। पद्यांश में दुःख के लिए 'करुण, क्षणिक, दीन अवसाद' शब्द आए हैं।

चरण 2: उत्तर:
श्रद्धा दुःख को क्षणिक अवसाद के समान मानती है, अर्थात् ऐसी उदासी जो थोड़ी देर टिकती है और बीत जाती है। पद्यांश में कोई अलग उपमा नहीं दी गई है, वह इसे साफ शब्दों में क्षणिक कहती है।

चरण 3: कारण:
उसके अनुसार तप और कष्ट ही जीवन का सत्य नहीं हैं। इस उदासी के भीतर कोमल आकांक्षाओं से भरा आशा का आनन्द सोया हुआ है। इसलिए दुःख स्थायी नहीं, केवल क्षणभर का है।

अंतिम उत्तर:
श्रद्धा दुःख को क्षणिक अवसाद मानती है, क्योंकि वह जीवन का स्थायी सत्य नहीं है और उसके पीछे आशा का आनन्द छिपा है।

4(v). *पद्यांश:* कहा आगंतुक ने सस्नेह-
'अरे तुम इतने हुए अधीर!
हार बैठे जीवन का दाँव
जीतते मरकर जिसको वीर।
तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद;
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।

(v) प्रस्तुत पद्यांश में श्रद्धा क्या प्रयत्न कर रही है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ पूछा गया है कि इस पद्यांश में श्रद्धा किस काम का प्रयत्न कर रही है। इसे उसके कथन और मनु की दशा से समझा जा सकता है।

चरण 2: उत्तर:
मनु जल-प्रलय के बाद अकेले और निराश हैं। श्रद्धा उनकी अधीरता दूर करने का प्रयत्न कर रही है। वह स्नेह से समझाती है कि जीवन की बाजी हारना वीरों को शोभा नहीं देता। साथ ही वह बताती है कि दुःख क्षणिक है और आशा का आनन्द भीतर छिपा है। इस प्रकार वह मनु के मन में उत्साह और जीने की इच्छा जगाने का प्रयत्न कर रही है।

अंतिम उत्तर:

श्रद्धा मनु की निराशा दूर करके उनमें आशा, उत्साह और कर्म की भावना जगाने का प्रयत्न कर रही है।

OR

4(i). *पद्यांश:* बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुन-गुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: संदर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा की कविता 'जाग तुझको दूर जाना' से लिया गया है। यह कविता हमारी पाठ्यपुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित है।

चरण 2: कविता का परिचय:
यह एक प्रेरणा-गीत है, जो महादेवी जी के काव्य-संग्रह 'सान्ध्यगीत' में मिलता है। इसमें कवयित्री अपने प्राणों को सांसारिक आकर्षणों में न उलझने और लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए जगाती हैं।

अंतिम उत्तर:
संदर्भ: पाठ 'जाग तुझको दूर जाना', कवयित्री महादेवी वर्मा।

4(ii). *पद्यांश:* बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुन-गुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: संदर्भ:
पाठ: 'जाग तुझको दूर जाना', कवयित्री: महादेवी वर्मा।

चरण 2: शब्दार्थ:
क्रंदन: रोना-चीखना, दुःख की पुकार। मधुप: भौंरा। गुनगुन: भौंरे की मीठी ध्वनि। दल: फूल की पंखुड़ी। ओस-गीले: ओस की बूँदों से भीगे हुए।

चरण 3: व्याख्या:
कवयित्री अपने प्राणों से पूछती हैं कि क्या भौंरे की मीठी गुनगुनाहट तुझे संसार के दुःख और पुकार भुला देगी? क्या ओस से भीगी फूलों की कोमल पंखुड़ियाँ तुझे अपने भीतर डुबो लेंगी? आशय यह है कि सुख और सौन्दर्य के आकर्षण साधक को उसके कर्तव्य से नहीं हटा सकते। जो व्यक्ति संसार की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझता है, वह क्षणिक सुखों में खोकर अपना लक्ष्य नहीं भूल सकता।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य:
प्रश्न शैली में दृढ़ संकल्प प्रकट हुआ है। 'मधुप की मधुर' में अनुप्रास है। भाषा सरल खड़ी बोली है और भाव छायावादी है।

निष्कर्ष:
सांसारिक सुख-सौन्दर्य लक्ष्य-पथ के साधक को बाँध नहीं सकते।

4(iii). *पद्यांश:* बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुन-गुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।

(iii) उपर्युक्त पद्यांश से पथिक को क्या प्रेरणा मिलती है?

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: पद्यांश का स्रोत:
ये पंक्तियाँ महादेवी वर्मा के गीत 'जाग तुझको दूर जाना' से ली गई हैं। यह गीत उनके काव्य-संग्रह 'सांध्यगीत' में है।

चरण 2: पथिक को मिलने वाली प्रेरणा:
कवयित्री पथिक से कहती हैं कि संसार के सुंदर आकर्षण उसे बाँध नहीं सकते। मोम जैसे कोमल बंधन, तितलियों के रंगीन पंख, भौंरे की गुन-गुन और ओस से भीगे फूल उसकी राह नहीं रोक सकते।
इसलिए पथिक को प्रेरणा मिलती है कि वह सुख-सुविधाओं के मोह में न फँसे। वह अपनी ही छाया को अपना कारागार न बनाए। आलस्य त्यागकर जागे, क्योंकि उसे अपने लक्ष्य तक बहुत दूर जाना है।

निष्कर्ष:
पद्यांश पथिक को मोह-बंधन तोड़कर सजग रहने और निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देता है।

4(iv). *पद्यांश:* बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुन-गुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।

(iv) उपर्युक्त पद्यांश में रस और उसका स्थायी भाव लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रस की पहचान:
इस पद्यांश में वीर रस है। इसका स्थायी भाव उत्साह है।

चरण 2: कारण:
जब किसी के मन में कठिनाइयों से जूझकर लक्ष्य पाने का जोश जागता है, तब वीर रस बनता है। यहाँ कवयित्री पथिक को जगाती हैं और कहती हैं कि 'जाग तुझको दूर जाना'। वे मोह के हर बंधन को तुच्छ बताकर आगे बढ़ने का उत्साह भरती हैं। इसी उत्साह के कारण यहाँ वीर रस है।

अंतिम उत्तर:
रस: वीर रस, स्थायी भाव: उत्साह।

4(v). *पद्यांश:* बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुन-गुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।

(v) 'मधुप' और 'ओस' का पर्यायवाची शब्द लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्दों का अर्थ:
'मधुप' का अर्थ है भौंरा, जो फूलों का रस पीता है। 'ओस' का अर्थ है रात में पत्तों और फूलों पर जमी पानी की नन्ही बूँदें।

चरण 2: पर्यायवाची शब्द:
मधुप: भौंरा, भ्रमर, मधुकर।
ओस: तुषार, शबनम, हिमकण।

अंतिम उत्तर:
मधुप का पर्यायवाची भौंरा और ओस का पर्यायवाची तुषार है।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **प्रो० जी० सुंदर रेड्डी**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का जन्म सन् 1919 ई० में आन्ध्र प्रदेश में हुआ। संस्कृत और तेलुगु का ज्ञान इन्हें आरम्भ में ही मिला, उच्च शिक्षा हिन्दी में हुई। ये आन्ध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। इन्होंने हिन्दी और तेलुगु साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके दोनों भाषाओं को निकट लाने का कार्य किया। इनकी शैली विचारप्रधान और सरल है।
प्रमुख रचनाएँ: साहित्य और समाज, मेरे विचार, दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य, वैचारिकी।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. ये हिन्दी भाषी और दक्षिण भारतीय क्षेत्रों के बीच साहित्यिक सेतु माने जाते हैं।
2. इनके निबन्धों में भाषा, साहित्य, समाज और राष्ट्रीय एकता जैसे विषय मिलते हैं।
3. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त, गम्भीर और शुद्ध है, शैली विवेचनात्मक है।
4. अन्य कृतियाँ: हिन्दी और तेलुगु: एक तुलनात्मक अध्ययन, शोध और बोध।

निष्कर्ष:
प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी हिन्दी के विद्वान समीक्षक और निबन्धकार थे, जिन्होंने उत्तर-दक्षिण की भाषाओं को जोड़ने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई सन् 1906 ई० को देवबन्द (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये स्वतन्त्रता सेनानी और पत्रकार भी थे तथा 'ज्ञानोदय' पत्रिका का सम्पादन किया। लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और ललित निबन्ध इनकी प्रिय विधाएँ हैं। भाषा सरल और भावपूर्ण तथा शैली मार्मिक है।
प्रमुख रचनाएँ: ज़िन्दगी मुस्कराई, बाजे पायलिया के घुँघरू, दीप जले शंख बजे, माटी हो गई सोना, आकाश के तारे धरती के फूल।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 9 मई सन् 1995 ई० को हुआ।
2. इन्होंने 'नया जीवन' और 'विकास' जैसे पत्र भी निकाले।
3. इनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना, सेवा-भाव और नैतिक मूल्यों पर बल मिलता है।
4. अन्य कृतियाँ: महके आँगन चहके द्वार, नई पीढ़ी नए विचार, क्षण बोले कण

मुसकाए।

निष्कर्ष:
प्रभाकर जी हिन्दी के सफल निबन्धकार और संस्मरणकार थे, जिन्होंने छोटी-छोटी घटनाओं से जीवन की बड़ी सीख दी।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **हरिशंकर परसाई**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन् 1924 ई० को होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के जमानी गाँव में हुआ। इन्होंने अध्यापन छोड़कर स्वतन्त्र लेखन अपनाया और 'वसुधा' पत्रिका निकाली। समाज और राजनीति की विसंगतियों, पाखण्ड तथा भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य इनकी विशेषता है। भाषा सरल, बोलचाल की तथा शैली व्यंग्यात्मक है। प्रमुख रचनाएँ: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, विकलांग श्रद्धा का दौर, रानी नागफनी की कहानी।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 10 अगस्त सन् 1995 ई० को जबलपुर में हुआ।
2. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
3. इन्हें हिन्दी का श्रेष्ठ व्यंग्यकार माना जाता है।
4. अन्य कृतियाँ: वैष्णव की फिसलन, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, सदाचार का ताबीज, तब की बात और थी, तट की खोज।

निष्कर्ष:
परसाई जी ने व्यंग्य को हँसी से आगे बढ़ाकर समाज सुधार का साधन बनाया।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **सुमित्रानन्दन पन्त**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई सन् 1900 ई० को कौसानी (अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड) में हुआ। इनका मूल नाम गुसाईं दत्त था। ये छायावाद के प्रमुख कवि हैं और प्रकृति के सुकुमार कवि कहलाते हैं। इनकी काव्य-यात्रा छायावाद, प्रगतिवाद और अरविन्द-दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवाद तक गई। भाषा कोमल और संगीतमय है।
प्रमुख कृतियाँ: वीणा, पल्लव, गुंजन, युगान्त, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, लोकायतन, चिदम्बरा।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 28 दिसम्बर सन् 1977 ई० को हुआ।
2. 'चिदम्बरा' पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला और 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।
3. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।
4. अन्य कृतियाँ: ग्रन्थि, उत्तरा, स्वर्णधूलि, अतिमा, रजतशिखर।

निष्कर्ष:
पन्त जी ने प्रकृति-सौन्दर्य और मानवतावादी विचार को कोमल शब्दों में व्यक्त कर हिन्दी कविता को समृद्ध किया।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **मैथिलीशरण गुप्त**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त सन् 1886 ई० को चिरगाँव (झाँसी, उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये महावीरप्रसाद द्विवेदी से प्रेरित थे और खड़ी बोली के प्रतिष्ठित कवि बने। राष्ट्रप्रेम, अतीत-गौरव और नारी के प्रति सम्मान इनके काव्य के मुख्य विषय हैं। इन्हें 'राष्ट्रकवि' कहा जाता है। भाषा शुद्ध खड़ी बोली है।
प्रमुख कृतियाँ: भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, द्वापर, नहुष।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 12 दिसम्बर सन् 1964 ई० को हुआ।
2. 'साकेत' इनका श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिसमें उर्मिला के त्याग का वर्णन है।
3. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया और ये राज्यसभा के सदस्य रहे।
4. अन्य कृतियाँ: किसान, झंकार, विष्णुप्रिया, सिद्धराज, काबा और कर्बला।

निष्कर्ष:
गुप्त जी ने खड़ी बोली को काव्य की भाषा के रूप में स्थापित किया और राष्ट्रीय चेतना जगाई।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द): **रामधारी सिंह 'दिनकर'**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: 80 शब्दों में साहित्यिक परिचय:
रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर सन् 1908 ई० को सिमरिया (बेगूसराय, बिहार) में हुआ। ये राष्ट्रीय चेतना और वीर रस के ओजस्वी कवि तथा गद्यकार थे। इन्हें

'राष्ट्रकवि' कहा जाता है। इनकी कविता में शोषण के विरुद्ध आक्रोश और भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव है। भाषा ओजपूर्ण खड़ी बोली है।
प्रमुख कृतियाँ: रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, संस्कृति के चार अध्याय।

चरण 2: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. इनका निधन 24 अप्रैल सन् 1974 ई० को हुआ।
2. 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
3. भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया और ये राज्यसभा के सदस्य रहे।
4. अन्य कृतियाँ: सामधेनी, द्वन्द्वगीत, परशुराम की प्रतीक्षा, अर्धनारीश्वर।

निष्कर्ष:
दिनकर जी ने ओज और पौरुष से भरी कविता द्वारा देश को जगाया और हिन्दी साहित्य को नई ऊर्जा दी।

6. 'ध्रुवयात्रा' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:
'ध्रुवयात्रा' हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार जैनेन्द्र कुमार की मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसके मुख्य पात्र राजा रिपुदमन, उर्मिला और आचार्य मारुति हैं।

चरण 2: उद्देश्य (80 शब्दों में):
जैनेन्द्र कुमार की 'ध्रुवयात्रा' का उद्देश्य प्रेम को विवाह जैसे सामाजिक बन्धन से ऊँचा और पवित्र दिखाना है। उर्मिला राजा रिपुदमन को व्यक्तिगत सुख से ऊपर उठकर महान लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। कहानी बताती है कि सच्चा प्रेम त्याग,

आत्मबलिदान और ऊँचे आदर्शों से जुड़ा होता है। साथ ही लेखक स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध, प्रेम और कर्तव्य के द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक चित्रण करता है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):
1. रिपुदमन उत्तरी ध्रुव जीतकर लौटता है, पर उर्मिला उसे दक्षिणी ध्रुव की यात्रा के लिए प्रेरित करती है।
2. उर्मिला पिता के कहने पर भी विवाह का सामाजिक बन्धन स्वीकार नहीं करती।
3. अन्त में रिपुदमन के आत्मबलिदान का समाचार मिलता है। इससे प्रेम की पवित्रता और त्याग की भावना और गहरी हो जाती है।

निष्कर्ष:
'ध्रुवयात्रा' का उद्देश्य प्रेम की श्रेष्ठता, त्याग और आदर्श की स्थापना है।

OR

'लाटी' कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: कहानी का परिचय:
'लाटी' प्रसिद्ध कथाकार शिवानी की घटना-प्रधान कहानी है। इसके मुख्य पात्र कप्तान जोशी और उसकी पहली पत्नी बानो हैं।

चरण 2: कथासार (80 शब्दों में):
शिवानी की कहानी 'लाटी' में कप्तान जोशी का विवाह सुन्दर बानो से होता है। विवाह के तीसरे दिन वह युद्ध पर बसरा चला जाता है। ससुराल में सास-ननदों के तानों और कठोर श्रम से बानो क्षय रोग की शिकार हो जाती है। इलाज असम्भव जानकर वह नदी में कूद पड़ती है। कप्तान उसे मृत मानकर दूसरा विवाह कर लेता है। सोलह वर्ष बाद भुवाली में वह वैष्णवियों के दल में गूँगी 'लाटी' के रूप में मिलती है।

चरण 3: अतिरिक्त बिन्दु (शब्द-सीमा से बाहर):

1. कुमाऊँनी में 'लाटी' का अर्थ गूँगी होता है। बानो अपनी स्मृति और वाणी खो चुकी है।
2. कहानी में नारी की पीड़ा और ससुराल में स्त्री द्वारा स्त्री के शोषण को दिखाया गया है।
3. बीते जीवन की करुण झलक के साथ कहानी मार्मिक अन्त पर पहुँचती है।

निष्कर्ष:
कथा बानो के दुःख, त्याग और अन्तिम अनपेक्षित मिलन को दर्शाती है।

7(a). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रस्तावना:
सुमित्रानन्दन पन्त-रचित 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। यह काव्य पन्त जी के महाकाव्य 'लोकायतन' का अंश है। इसमें 1921 से 1947 तक के स्वतन्त्रता-संग्राम का चित्रण है।

चरण 2: नायक की चारित्रिक विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के पुजारी: गाँधी जी ने कठिन से कठिन समय में भी सत्य और अहिंसा का मार्ग नहीं छोड़ा। इन्हीं अस्त्रों से उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य को हिला दिया।
2. दृढ़ प्रतिज्ञ: नमक-कानून तोड़ने के लिए उन्होंने कहा कि यदि नमक-कर न तोड़ सका तो पथ में ही प्राण त्याग दूँगा।
3. मानवता के समर्थक: वे हर मनुष्य में ईश्वर का अंश मानते थे और कहते थे कि घृणा को घृणा से नहीं, प्रेम से जीता जा सकता है।
4. निर्भीक और साम्प्रदायिक एकता के हामी: दमन-चक्र से वे नहीं झुके। नोआखली के दंगों से आहत होकर उन्होंने आमरण अनशन का संकल्प किया।
5. सच्चे लोकनायक: वे उपदेश से नहीं, अपने आचरण से जनता को राह दिखाते थे।

छुआछूत और जाति-भेद का उन्होंने विरोध किया।

निष्कर्ष:
गाँधी जी सत्य, अहिंसा, त्याग और मानव-प्रेम के मूर्त रूप हैं। 'मुक्तियज्ञ' में वे राष्ट्रपिता और युग-नायक के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

OR

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:
'मुक्तियज्ञ' सुमित्रानन्दन पन्त का खण्डकाव्य है, जो 'लोकायतन' का अंश है। इसमें 1921 से 1947 तक गाँधी जी के नेतृत्व में चले स्वतन्त्रता-संग्राम की कथा है।

चरण 2: कथावस्तु:
कथा का आरम्भ नमक-कानून के विरोध से होता है। अंग्रेजों ने नमक पर कर बढ़ा दिया था। गाँधी जी साबरमती आश्रम से चौबीस दिन की यात्रा करके डाण्डी पहुँचे और समुद्र-तट पर नमक बनाकर कानून तोड़ा।
अंग्रेजी सरकार ने दमन-चक्र चलाया। नेताओं और सत्याग्रहियों से जेलें भर गईं। इसी बीच 1927 में साइमन कमीशन का देशव्यापी बहिष्कार हुआ। गाँधी जी ने छुआछूत और साम्प्रदायिक भेद-भाव के विरुद्ध भी अभियान चलाया।
1942 में उन्होंने 'भारत छोड़ो' का आह्वान किया। गाँधी जी और कांग्रेसी नेता बन्दी बनाए गए, तो जनता ने स्वयं हड़ताल और आन्दोलन किए। जेल में कस्तूरबा का देहान्त हुआ, पर गाँधी जी अपने कर्तव्य पर डटे रहे।
15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र हुआ, पर विभाजन का घाव भी मिला। नोआखली के दंगों से दुःखी होकर गाँधी जी ने अनशन का संकल्प किया। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने उनकी हत्या कर दी।

निष्कर्ष:
कवि का सन्देश है कि गाँधी जी का शरीर नष्ट हुआ, पर उनके विचार और उद्देश्य भारतीय चेतना में सदा जीवित रहेंगे।

7(b). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु को अपने शब्दों में वर्णित कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
'रश्मिरथी' रामधारी सिंह 'दिनकर' का खण्डकाव्य है। इसका अर्थ है सूर्य-किरणों के रथ का सवार, अर्थात् सूर्यपुत्र कर्ण। इसमें सात सर्ग हैं और कथा कर्ण के जीवन-संघर्ष की है।

चरण 2: कथावस्तु:
प्रथम सर्ग: कर्ण रंगभूमि में अपनी धनुर्विद्या दिखाता है और अर्जुन को चुनौती देता है। कृपाचार्य उसे सूतपुत्र कहकर रोक देते हैं। दुर्योधन उसे अंगदेश का राजा बनाकर मित्र बना लेता है।
द्वितीय सर्ग: कर्ण परशुराम से शस्त्र-विद्या सीखता है। सच खुलने पर परशुराम उसे शाप देते हैं कि निर्णायक समय पर वह अस्त्र-विद्या भूल जाएगा।
तृतीय सर्ग: श्रीकृष्ण सन्धि का प्रस्ताव लेकर जाते हैं। दुर्योधन पाँच गाँव भी नहीं देता। युद्ध निश्चित हो जाता है।
चतुर्थ सर्ग: इन्द्र ब्राह्मण के वेश में आकर कर्ण से कवच-कुण्डल माँग लेते हैं। कर्ण छल जानकर भी दान दे देता है।
पंचम सर्ग: कुन्ती कर्ण को अपना पुत्र बताकर पाण्डवों के पक्ष में आने को कहती है। कर्ण मित्र से विश्वासघात नहीं करता, पर चार पाण्डवों के प्राण न लेने का वचन देता है।
षष्ठ और सप्तम सर्ग: कर्ण युद्ध में उतरता है और अन्त में अर्जुन के बाण से वीरगति पाता है।

निष्कर्ष:
काव्य दिखाता है कि जन्म से नहीं, कर्म और चरित्र से मनुष्य महान बनता है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'रश्मिरथी' का नायक कर्ण है। कुन्ती का पुत्र होकर भी वह सूत अधिरथ के घर पला और जीवन भर सूतपुत्र कहलाकर अपमान सहता रहा।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ:
1. महान योद्धा: रंगभूमि में उसकी धनुर्विद्या देखकर अर्जुन, द्रोण और भीष्म तक चकित रह गए।
2. स्वाभिमानी: वह जाति नहीं, कर्म को बड़ा मानता है। उसका भाव है कि तेजस्वी लोग गोत्र बताकर नहीं, अपना करतब दिखाकर सम्मान पाते हैं।
3. महादानी: इन्द्र के छल को जानकर भी उसने अपने जन्मजात कवच-कुण्डल दान कर दिए।
4. मित्रता का निर्वाह: दुर्योधन के उपकार के कारण उसने कुन्ती और कृष्ण के प्रलोभन ठुकरा दिए और अन्त तक मित्र का साथ दिया।
5. गुरुभक्त और सहनशील: परशुराम की नींद न टूटे, इसलिए कीड़े के डंक की पीड़ा चुपचाप सहता रहा।
6. सत्यवादी: गुरु से छल की भूल का उसे शाप मिला, फिर भी वह सत्य से नहीं हटा और कुन्ती को दिया वचन निभाया।

निष्कर्ष:

कर्ण वीर, दानी, स्वाभिमानी और मित्र-भक्त है। दिनकर ने उसे दुखी और उपेक्षित होते हुए भी महान चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

7(c). 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: काव्य का परिचय:
'आलोकवृत्त' गुलाब खण्डेलवाल का आठ सर्गों वाला खण्डकाव्य है। इसमें महात्मा गाँधी के जन्म से स्वतन्त्रता-प्राप्ति तक के जीवन और स्वाधीनता-संग्राम की कथा है।

चरण 2: कथावस्तु:
1. प्रथम सर्ग: भारत के गौरवशाली अतीत और पराधीनता का वर्णन है। गुजरात के पोरबन्दर में गाँधी जी का जन्म होता है।
2. द्वितीय सर्ग: बचपन की भूल पर पश्चात्ताप, माता को दिया मद्य-मांस त्याग का वचन, कस्तूरबा से विवाह, इंग्लैण्ड में पढ़ाई और बैरिस्टर बनकर वापसी।
3. तृतीय सर्ग: दक्षिण अफ्रीका में रेल से उतारे जाने पर रंगभेद का अपमान। वहाँ उन्होंने सत्य-अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह अपनाया।
4. चतुर्थ सर्ग: भारत लौटकर साबरमती आश्रम की स्थापना, चम्पारन के नील-किसानों और खेड़ा के सत्याग्रह का नेतृत्व।
5. पंचम सर्ग: नागपुर अधिवेशन और असहयोग आन्दोलन। साम्प्रदायिक दंगों से दुःखी होकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए इक्कीस दिन का उपवास।
6. षष्ठ सर्ग: चौबीस दिन की डाण्डी-यात्रा और नमक-सत्याग्रह, हजारों की गिरफ्तारी, गोलमेज सम्मेलन।
7. सप्तम सर्ग: द्वितीय विश्वयुद्ध, क्रिप्स मिशन की विफलता, भारत छोड़ो आन्दोलन, गाँधी जी का कारावास और कस्तूरबा से वार्तालाप।
8. अष्टम सर्ग: स्वतन्त्रता का उदय, साम्प्रदायिक दंगे और गाँधी जी की शान्ति-प्रार्थना।

निष्कर्ष:
काव्य गाँधी जी को सत्य, अहिंसा और मानव-कल्याण के आलोक-पुंज के रूप में प्रस्तुत करता है।

OR

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
गुलाब खण्डेलवाल रचित 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। पूरी कथा उन्हीं के जन्म से लेकर देश की स्वतन्त्रता तक के जीवन के चारों ओर घूमती है। वे धीरोदात्त नायक के रूप में चित्रित हुए हैं।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. सत्य और अहिंसा के उपासक: अफ्रीका में रेल के डिब्बे से उतारे जाने पर उन्होंने बदले की भावना नहीं अपनाई। उन्होंने अहिंसा के बल पर सत्याग्रह का मार्ग चुना।
2. सच्चे देशभक्त: चम्पारण, खेड़ा, असहयोग, दाण्डी यात्रा और भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने तन, मन, धन देश को अर्पित कर दिया।
3. आत्मशुद्धि के आग्रही: बचपन में चोरी से मांस खाने पर वे पछताए और पिता से क्षमा माँगी। यह उनकी सच्चाई दिखाता है।
4. साम्प्रदायिक एकता के समर्थक: हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उन्होंने इक्कीस दिन का उपवास रखा।
5. ईश्वर में आस्थावान: वे साधन की पवित्रता को महत्त्व देते थे और अन्त में देश में शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

निष्कर्ष:

गाँधीजी सत्य, अहिंसा, त्याग और देशप्रेम की जीवित मूर्ति हैं। वे सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रकाश-पुंज हैं, इसीलिए काव्य का नाम 'आलोकवृत्त' सार्थक है।

7(d). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक कौन है:
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' रचित 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक थानेश्वर और कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन हैं। पाँच सर्गों की सारी घटनाएँ उन्हीं के जीवन से जुड़ी हैं।

चरण 2: चरित्रांकन:
1. आदर्श पुत्र और भाई: पिता के बीमार होने का समाचार पाते ही वे आखेट छोड़कर तुरन्त लौट आते हैं। बहन राज्यश्री को आत्मदाह से बचाकर वे भाई का कर्तव्य निभाते हैं।
2. धैर्यवान: पिता, माता, बड़े भाई और बहनोई की मृत्यु के संकट में भी वे शान्त और धीर रहते हैं।
3. वीर योद्धा: छह वर्षों तक निरन्तर युद्ध करके उन्होंने उत्तर भारत के शत्रुओं को पराजित किया और साम्राज्य फैलाया।
4. न्यायप्रिय शासक: वे मानते हैं कि राजा का प्रजा के धन पर अपना अधिकार नहीं है, वह तो प्रजा का सेवक है।
5. महान त्यागी: प्रयाग में हर पाँचवें वर्ष वे अपना सारा राजकोष दान कर देते हैं और बहन से वस्त्र लेकर पहनते हैं।

निष्कर्ष:
हर्ष का चरित्र वीरता, कर्तव्य और त्याग का सुन्दर संगम है। इसीलिए काव्य का नाम 'त्यागपथी' उचित है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के किसी एक सर्ग की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: चुना गया सर्ग:
इस उत्तर में 'त्यागपथी' के प्रथम सर्ग की कथावस्तु दी जा रही है। यह खण्डकाव्य रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की रचना है और इसमें कुल पाँच सर्ग हैं।

चरण 2: प्रथम सर्ग की कथा:
काव्य का आरम्भ हर्षवर्धन के किशोर काल और थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्धन के सुख-समृद्धि से भरे शान्त राज्य के वर्णन से होता है।
एक दिन राजकुमार हर्ष आखेट के लिए वन गए हुए थे। तभी उन्हें पिता के अस्वस्थ होने का समाचार मिलता है और वे तुरन्त वायु के वेग से राजधानी लौट आते हैं।
राजा की बीमारी बढ़ने पर माता यशोमती पति के साथ आत्मदाह का निश्चय कर लेती हैं। सबके समझाने पर भी वे अपने निर्णय पर अटल रहती हैं।
कुछ समय बाद पिता का भी निधन हो जाता है। इस प्रकार हर्ष पर शोक का भारी बोझ आ पड़ता है।

चरण 3: अन्य सर्गों की झलक:
आगे के सर्गों में राज्यवर्धन की मृत्यु, हर्ष की दिग्विजय, राज्यश्री की रक्षा और प्रयाग के त्याग-महोत्सव का वर्णन है।

निष्कर्ष:
प्रथम सर्ग हर्ष के भावी दायित्व और उनके चरित्र की आधारभूमि तैयार करता है।

7(e). 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: नायक का परिचय:
डॉ. शिवबालक शुक्ल रचित 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवणकुमार हैं। वे अपने अन्धे माता-पिता के आदर्श सेवक हैं। पूरा काव्य उन्हीं के जीवन और उनकी मृत्यु की करुण घटना पर आधारित है।

चरण 2: चारित्रिक विशेषताएँ:
1. मातृ-पितृ भक्त: वे प्रातःकाल से सायंकाल तक अपने नेत्रहीन माता-पिता की सेवा में लगे रहते हैं।
2. सत्यवादी और निर्भीक: मृत्यु के समय भी वे राजा दशरथ के सामने सच्ची बात कहते हैं और घटना बताते हैं।
3. क्षमाशील: दशरथ के बाण से घायल होने पर भी वे उन पर क्रोध नहीं करते, बल्कि उन्हें सान्त्वना देते हैं।
4. अतिथि-सत्कार करने वाले: वे आश्रम में आने वालों का सम्मान करते हैं और धर्म का पालन करते हैं।
5. परोपकारी और सन्तोषी: वे सादा तपस्वी जीवन जीते हैं और माता-पिता की चिन्ता में ही अपना अन्तिम क्षण बिताते हैं।

निष्कर्ष:
श्रवणकुमार आदर्श पुत्र, त्यागी और क्षमाशील तपस्वी के रूप में चित्रित हैं। उनका जीवन हर पुत्र के लिए प्रेरणा है।

OR

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: परिचय:
'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के रचयिता डॉ. शिवबालक शुक्ल हैं। इसकी कथा रामायण के प्रसंग पर आधारित है और यह नौ सर्गों में विभक्त है।

चरण 2: कथावस्तु का क्रम:
1. आरम्भ में अयोध्या नगरी और राजा दशरथ के वैभव का वर्णन है। वे सरयू के वन में शिकार की योजना बनाते हैं।
2. सरयू-तट के आश्रम में मुनिकुमार श्रवण अपने अन्धे माता-पिता की सेवा में लगे रहते हैं।
3. दशरथ आखेट के लिए निकलते हैं। रात में सरयू तट पर श्रवण माता-पिता के लिए जल भरने आते हैं।
4. घड़े की आवाज सुनकर दशरथ उसे पशु समझ बैठते हैं और शब्दभेदी बाण चला देते हैं। बाण श्रवण को लग जाता है।
5. सच्चाई जानकर दशरथ पछताते हैं और श्रवण के माता-पिता के पास जाकर अपराध बताते हैं।
6. पुत्र की मृत्यु से दुखी माता-पिता विलाप करते हुए दशरथ को शाप देते हैं कि तुम भी पुत्र-वियोग में प्राण त्यागोगे।
7. अन्त में श्रवण दिव्य रूप में दर्शन देते हैं। माता-पिता पुत्र-शोक में प्राण त्याग देते हैं और चिता में तीनों के शरीर भस्म हो जाते हैं। दशरथ लौटकर बाद में राम के वन-गमन के समय इस शाप को याद करते हैं।

निष्कर्ष:
काव्य की कथा करुण रस से भरी है और पुत्र-धर्म तथा कर्म-फल का सन्देश देती है।

7(f). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य से सबसे प्रभावी व्यक्तित्व का चरित्रांकन कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सबसे प्रभावी व्यक्तित्व:
द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचित 'सत्य की जीत' की नायिका द्रौपदी है। पूरी कथा उसी के साहस और आत्मबल के चारों ओर घूमती है, इसलिए वही सबसे प्रभावी पात्र है।

चरण 2: चरित्र की विशेषताएँ:
1. निर्भीक और साहसी: दुःशासन उसे केश पकड़कर सभा में लाता है, फिर भी वह डरती नहीं। वह ललकारती है, 'अरे ओ दुःशासन निर्लज्ज, देख तू नारी का भी क्रोध।'
2. स्वाभिमानी: वह अपमान को चुपचाप सहने से मना कर देती है।
3. बुद्धिमती और तर्कशील: वह सभा में पूछती है कि जो युधिष्ठिर स्वयं को हार चुके थे, उन्हें मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था।
4. सत्य और धर्म की समर्थक: वह कहती है कि सत्य, धर्म और न्याय मेरे साथ हैं।
5. आधुनिक नारी का रूप: वह अबला नहीं, दुर्गा के समान शक्ति-सम्पन्न है। उसके आत्मबल के आगे दुःशासन हार जाता है।

निष्कर्ष:
द्रौपदी निर्भीकता, स्वाभिमान, तर्क और नैतिक बल की प्रतिमूर्ति है। उसके चरित्र से ही 'सत्य की जीत' का सन्देश पूरा होता है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में वर्णित कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: कथा का आधार:
'सत्य की जीत' के रचयिता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हैं। इसकी कथा महाभारत के सभापर्व में वर्णित द्रौपदी-चीरहरण की घटना पर आधारित है।

चरण 2: कथावस्तु:
दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीड़ा के लिए बुलाता है। पाण्डव निमन्त्रण स्वीकार कर कौरवों के छल-जाल में फँस जाते हैं। कौरवों के छल से युधिष्ठिर जुए में निरन्तर हारते जाते हैं और अन्त में सर्वस्व हारने के बाद द्रौपदी को भी हार जाते हैं।
दुर्योधन के आदेश पर दुःशासन द्रौपदी के केश पकड़कर उसे सभा में घसीट लाता है। द्रौपदी निडर होकर पूछती है कि जो स्वयं को हार चुका, उसे मुझे दाँव पर लगाने का अधिकार कैसे था। विकर्ण उसका समर्थन करता है। दुःशासन बल के घमण्ड में उसका चीर खींचने लगता है। द्रौपदी का आत्मबल इतना प्रबल होता है कि दुःशासन लज्जित और पराजित हो जाता है।

चरण 3: परिणाम:
सभा में अन्याय की निन्दा होती है। धृतराष्ट्र सत्य को पहचान कर पाण्डवों को दासता से मुक्त करते हैं। इस प्रकार अन्त में सत्य की विजय होती है।

निष्कर्ष:
खण्डकाव्य का सन्देश है कि पशुबल चाहे जितना बड़ा हो, सत्य और आत्मबल के सामने उसे झुकना पड़ता है।

8(a). दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते । इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं गौरवम् अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते ।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्' से उद्धृत है। इसमें संस्कृत के महान कवियों और इस भाषा के प्रति हमारे कर्तव्य का वर्णन है।

चरण 2: शब्दार्थ:
आदिकविः = पहले कवि (वाल्मीकि)। कविकुलगुरुः = कवियों के कुल के गुरु (कालिदास)। ग्रन्थरत्नैः = श्रेष्ठ ग्रन्थों से। विराजन्ते = शोभित हैं। मातृसमम् = माता के समान। स्वातन्त्र्यम् = स्वतन्त्रता। अखण्डत्वम् = अखण्डता।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास तथा भास, भारवि, भवभूति आदि अन्य महाकवि अपने श्रेष्ठ ग्रन्थ-रत्नों के कारण आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं। यह भाषा हमारे लिए माता के समान सम्माननीय और वन्दनीय है, क्योंकि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता की रक्षा संस्कृत से ही की जा सकती है।

चरण 4: सार:
महाकवियों की रचनाएँ संस्कृत को अमर बनाती हैं। इसलिए हमें उसका आदर करना चाहिए।

OR

दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिये:
अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंहं राजानमकुर्वन् । मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम् । तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत् । स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चित्तरुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति । हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसङ्घं समन्यपतत् । नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन् । हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश ।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह गद्यांश 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'जातक-कथा' से लिया गया है। इसमें बताया

गया है कि प्रथम कल्प में पशु, मछलियों और पक्षियों ने अपने-अपने राजा कैसे चुने और हंसराज ने अपनी पुत्री के लिए क्या किया।

चरण 2: शब्दार्थ:
चतुष्पदाः = चौपाए। मत्स्याः = मछलियाँ। शकुनयः = पक्षी। दुहिता = पुत्री। चित्तरुचितम् = मन को पसन्द। वृणुयात् = चुन ले। शकुनिसङ्घे संन्यपतत् = पक्षियों के समूह में उतरा। पाषाणतले = चट्टान पर।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
पहले कल्प में चौपायों ने सिंह को राजा बनाया, मछलियों ने आनन्द नामक मछली को और पक्षियों ने सुवर्णहंस को। उस सुवर्ण राजहंस की पुत्री हंसपोतिका बहुत सुन्दर थी। उसने पुत्री को वर दिया कि वह अपने मन-पसन्द पति को चुन ले। पुत्री को वर देकर हंसराज हिमालय पर पक्षियों के समूह के बीच उतरा। हंस, मोर आदि अनेक प्रकार के पक्षी आकर एक बड़ी चट्टान पर एकत्र हुए। हंसराज ने पुत्री को आदेश दिया कि वह आकर अपने मन-पसन्द वर को चुन ले।

चरण 4: सार:
हंसराज ने बेटी को अपना वर स्वयं चुनने की स्वतन्त्रता दी और इसके लिए हिमालय पर पक्षियों का समूह एकत्र हुआ।

8(b). दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'सुभाषितरत्नानि' से लिया गया है। यह सुभाषित-संग्रह का एक प्रसिद्ध श्लोक है। इसमें दुष्ट और सज्जन के

स्वभाव की तुलना की गई है।

चरण 2: शब्दार्थ:
विवादाय = झगड़े के लिए। मदाय = घमण्ड के लिए। परेषाम् = दूसरों की। परिपीडनाय = कष्ट देने के लिए। खलस्य = दुष्ट का। साधोः = सज्जन का। विपरीतम् = उलटा। ज्ञानाय = ज्ञान के लिए। दानाय = दान के लिए। रक्षणाय = रक्षा के लिए।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
दुष्ट व्यक्ति की विद्या झगड़ा करने के लिए होती है, उसका धन घमण्ड बढ़ाने के लिए होता है और उसकी शक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए होती है।
सज्जन व्यक्ति के लिए यह सब उलटा होता है। उसकी विद्या ज्ञान के लिए, धन दान के लिए और शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

चरण 4: भावार्थ:
विद्या, धन और शक्ति एक ही होती हैं, पर उनका प्रयोग व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर करता है। दुष्ट इनका दुरुपयोग करता है, जबकि सज्जन इनका सदुपयोग करके समाज का भला करता है।

निष्कर्ष:
इस श्लोक का उत्तर एक श्लोक का ससन्दर्भ अनुवाद है। ऊपर पहला श्लोक (विद्या विवादाय धनं मदाय...) हल किया गया है।

OR

दिये गये श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
जयन्ति ते महाभागाः जन-सेवा-परायणाः ।
जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित् ॥

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: सन्दर्भ:
यह श्लोक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के पाठ 'महामना मालवीयः' से लिया गया है। इसमें जनसेवा करने वाले महापुरुषों की प्रशंसा की गई है।

चरण 2: शब्दार्थ:
जयन्ति = विजयी होते हैं। महाभागाः = महान भाग्य वाले, महापुरुष। जन-सेवा-परायणाः = जनसेवा में लगे रहने वाले। जरामृत्युभयम् = बुढ़ापे और मृत्यु का डर। येषाम् = जिनके। कीर्तितनोः = यशरूपी शरीर को। क्वचित् = कहीं भी।

चरण 3: हिन्दी अनुवाद:
जनसेवा में तत्पर रहने वाले वे महापुरुष जयवन्त होते हैं, जिनके यशरूपी शरीर को कहीं भी बुढ़ापे और मृत्यु का भय नहीं होता।

चरण 4: भावार्थ:
मनुष्य का भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है, पर जनसेवा से मिली कीर्ति सदा जीवित रहती है। इसलिए सेवाभावी लोग मरने के बाद भी लोगों के मन में अमर रहते हैं। मालवीय जी ऐसे ही महापुरुष थे।

9. निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अंग-अंग ढीला होना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ मुहावरा 'अंग-अंग ढीला होना' चुना गया है। इसका अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
अंग-अंग ढीला होना का अर्थ है बहुत अधिक थक जाना, शरीर में जरा भी शक्ति न

बचना। लंबे परिश्रम या यात्रा के बाद ऐसा होता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
दिन भर खेत में काम करने के बाद किसान का अंग-अंग ढीला हो गया।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: बहुत थक जाना। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।

OR

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **जमीन आसमान एक करना**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ मुहावरा 'जमीन आसमान एक करना' चुना गया है। इसका अर्थ और वाक्य में प्रयोग लिखना है।

चरण 2: अर्थ:
जमीन आसमान एक करना का अर्थ है किसी काम को पूरा करने के लिए बहुत अधिक प्रयास करना, हर संभव कोशिश लगा देना। कभी-कभी इसका अर्थ बहुत शोर या हलचल मचाना भी होता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
खोए हुए बच्चे को ढूँढने के लिए पुलिस ने जमीन आसमान एक कर दिया।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: बहुत अधिक प्रयत्न करना। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।

OR

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अधजल गगरी छलकत जाय**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यहाँ लोकोक्ति 'अधजल गगरी छलकत जाय' चुनी गई है। इसका अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
आधी भरी गगरी चलते समय छलकती है, पूरी भरी नहीं छलकती। इसी प्रकार जिसके पास थोड़ा ज्ञान या धन होता है, वह उसका अधिक दिखावा करता है। जो सचमुच विद्वान होता है, वह गंभीर रहता है।

चरण 3: वाक्य-प्रयोग:
थोड़ी सी अंग्रेजी सीखकर वह हर समय बड़बड़ाता रहता है, सच है कि अधजल गगरी छलकत जाय।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: कम ज्ञान वाला व्यक्ति अधिक दिखावा करता है। प्रयोग: ऊपर लिखा वाक्य।

OR

निम्नलिखित मुहावरों एवं लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: **अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह लोकोक्ति है। इसका अर्थ बताना है और उसे वाक्य में प्रयोग करना है।

चरण 2: अर्थ:
'अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग' का अर्थ है: सबका अपनी मर्जी से अलग-अलग बात कहना या अलग-अलग काम करना। जब किसी विषय पर सब लोग तालमेल के बिना अपनी ही राय चलाएँ, तब यह लोकोक्ति बोली जाती है।

चरण 3: वाक्य में प्रयोग:
समिति की बैठक में हर सदस्य अपनी ही बात पर अड़ा रहा, 'अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग' वाली स्थिति में कोई निर्णय नहीं हो सका।

अंतिम उत्तर:
अर्थ: सबका अलग-अलग अपनी बात कहना, आपस में तालमेल न होना। प्रयोग ऊपर के वाक्य में दिया गया है।

10(i). *अपठित गद्यांश:* वस्तुतः बोली, गोली से अधिक असरदार होती है। हम शब्दों द्वारा ही औरों को अपना बनाते हैं और शब्दों में ही अपने पराए बन जाते हैं। कौन-सा शब्द कब, कहाँ, किसके लिए बोलना है इसका ध्यान रखना ही औचित्य है और भाषा का यह औचित्य शब्द सौंदर्य का अहम हिस्सा है। सच तो यह है कि शब्दों का दुरुपयोग प्रायः होता है और इस दुरुपयोग को रोकने का उपाय शब्दों का सदुपयोग ही है। विशेषणों के प्रयोग में हम प्रायः अति उत्साहवश या अज्ञानवश उनका दुरुपयोग करते हैं, ऐसे निरर्थक प्रयोग करते हैं कि स्थिति हास्यास्पद हो जाती है।

(i) आशय स्पष्ट कीजिए - "बोली, गोली से अधिक असरदार होती है।"

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथन का संदर्भ:
यह वाक्य अपठित गद्यांश का पहला वाक्य है। इसमें 'बोली' का अर्थ है वाणी या शब्द और 'गोली' का अर्थ है हथियार या हिंसा।

चरण 2: आशय:
गोली केवल शरीर को घायल करती है, पर शब्द सीधे मन पर असर डालते हैं। मीठे और उचित शब्द किसी पराए को भी अपना बना लेते हैं। कठोर शब्द अपनों को भी दूर कर देते हैं और ऐसा घाव देते हैं जो जल्दी नहीं भरता।

चरण 3: सार:
इसलिए वाणी की शक्ति हथियार की शक्ति से कहीं अधिक है और हमें सोच-समझकर बोलना चाहिए।

अंतिम उत्तर:
लेखक का आशय है कि शब्दों का प्रभाव गोली से अधिक गहरा और स्थायी होता है।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* वस्तुतः बोली, गोली से अधिक असरदार होती है। हम शब्दों द्वारा ही औरों को अपना बनाते हैं और शब्दों में ही अपने पराए बन जाते हैं। कौन-सा शब्द कब, कहाँ, किसके लिए बोलना है इसका ध्यान रखना ही औचित्य है और भाषा का यह औचित्य शब्द सौंदर्य का अहम हिस्सा है। सच तो यह है कि शब्दों का दुरुपयोग प्रायः होता है और इस दुरुपयोग को रोकने का उपाय शब्दों का सदुपयोग ही है। विशेषणों के प्रयोग में हम प्रायः अति उत्साहवश या अज्ञानवश उनका दुरुपयोग करते हैं, ऐसे निरर्थक प्रयोग करते हैं कि स्थिति हास्यास्पद हो जाती है।

(ii) भाषा के संदर्भ में 'औचित्य' किसे कहा गया है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश में देखें:
गद्यांश में बताया गया है कि कौन-सा शब्द कब, कहाँ और किसके लिए बोलना है, इसका ध्यान रखना ही औचित्य है।

चरण 2: उत्तर:
भाषा के संदर्भ में 'औचित्य' का अर्थ है उचित समय, स्थान और व्यक्ति को देखकर

उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना। यह शब्द-सौंदर्य का महत्त्वपूर्ण भाग है।

अंतिम उत्तर:
सही समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार उचित शब्द बोलने को औचित्य कहा गया है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* वस्तुतः बोली, गोली से अधिक असरदार होती है। हम शब्दों द्वारा ही औरों को अपना बनाते हैं और शब्दों में ही अपने पराए बन जाते हैं। कौन-सा शब्द कब, कहाँ, किसके लिए बोलना है इसका ध्यान रखना ही औचित्य है और भाषा का यह औचित्य शब्द सौंदर्य का अहम हिस्सा है। सच तो यह है कि शब्दों का दुरुपयोग प्रायः होता है और इस दुरुपयोग को रोकने का उपाय शब्दों का सदुपयोग ही है। विशेषणों के प्रयोग में हम प्रायः अति उत्साहवश या अज्ञानवश उनका दुरुपयोग करते हैं, ऐसे निरर्थक प्रयोग करते हैं कि स्थिति हास्यास्पद हो जाती है।

(iii) शब्दों के दुरुपयोग को कैसे रोका जा सकता है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से संकेत:
लेखक के अनुसार शब्दों का दुरुपयोग प्रायः होता है। विशेषणों का प्रयोग लोग अति उत्साह या अज्ञान में गलत ढंग से करते हैं, जिससे स्थिति हास्यास्पद हो जाती है।

चरण 2: उपाय:
गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि इस दुरुपयोग को रोकने का उपाय शब्दों का सदुपयोग ही है। यानी शब्दों का प्रयोग सोच-समझकर, उचित अर्थ में और सही स्थान पर करना चाहिए।

अंतिम उत्तर:
शब्दों का सदुपयोग करने से ही उनके दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

OR

10(i). *अपठित गद्यांश:* कोई अपने दुर्भाग्य को कोस रहा है, कोई अपनी पारिवारिक दीनता को दोषी बता रहा है, कोई मार्गदर्शक के अभाव को अपनी असफलता का आधार मान रहा है - बहुत से असफल व्यक्ति इसी तरह अनेक कारणों को असफलता का आधार मानते हैं, विभिन्न कारणों की कल्पना कर हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं। वे अपने आप में कुछ कर नहीं पाते। वे समाज के लिए, संसार के लिए कुछ नहीं कर पाते। ऐसे मनुष्य को जीवन में कोई राह नहीं मिलती, कोई चारा नहीं दिखता। वे दूसरों से अपेक्षा करते हैं कि कोई उन्हें किसी लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग दिखाए, सफलता की सीढ़ी बताए, जिससे वे उस पर आसानी से चढ़ सकें। किन्तु ऐसे लोगों को यह भली-भाँति जानना चाहिए कि जहाँ चाह है, वहीं राह है। हमारी इच्छाशक्ति स्वयं हमारे लिए मार्ग बना देती है।

(i) अधिकांश असफल व्यक्ति कुछ विशेष क्यों नहीं कर पाते?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से कारण:
अधिकांश असफल व्यक्ति अपनी असफलता का दोष दुर्भाग्य, पारिवारिक गरीबी या मार्गदर्शक के अभाव पर डालते हैं।

चरण 2: उनका व्यवहार:
वे तरह-तरह के कारणों की कल्पना करके हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं और स्वयं प्रयास नहीं करते। वे दूसरों से आशा करते हैं कि कोई उन्हें रास्ता दिखा दे।

अंतिम उत्तर:
वे परिश्रम करने के बजाय बहाने बनाते और निष्क्रिय बैठे रहते हैं, इसलिए कुछ विशेष नहीं कर पाते।

10(ii). *अपठित गद्यांश:* कोई अपने दुर्भाग्य को कोस रहा है, कोई अपनी पारिवारिक दीनता को दोषी बता रहा है, कोई मार्गदर्शक के अभाव को अपनी असफलता का आधार मान रहा है - बहुत से असफल व्यक्ति इसी तरह अनेक कारणों को असफलता का आधार मानते हैं, विभिन्न कारणों की कल्पना कर हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं। वे अपने आप में कुछ कर नहीं पाते। वे समाज के लिए, संसार के लिए कुछ नहीं कर पाते। ऐसे मनुष्य को जीवन में कोई राह नहीं मिलती, कोई चारा नहीं दिखता। वे दूसरों से अपेक्षा करते हैं कि कोई उन्हें किसी लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग दिखाए, सफलता की सीढ़ी बताए, जिससे वे उस पर आसानी से चढ़ सकें। किन्तु ऐसे लोगों को यह भली-भाँति जानना चाहिए कि जहाँ चाह है, वहीं राह है। हमारी इच्छाशक्ति स्वयं हमारे लिए मार्ग बना देती है।

(ii) "जहाँ चाह है, वहीं राह है।" का आशय स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: कथन का अर्थ:
'चाह' का अर्थ है इच्छा या संकल्प और 'राह' का अर्थ है रास्ता या उपाय।

चरण 2: आशय:
जिस व्यक्ति के मन में कुछ पाने की सच्ची और दृढ़ इच्छा होती है, उसके लिए मार्ग अपने आप बन जाता है। कठिनाइयाँ आती हैं, पर लगन वाला व्यक्ति उन्हें पार कर लेता है। इच्छा न हो तो अनुकूल परिस्थितियाँ भी बेकार रहती हैं।

चरण 3: गद्यांश से संबंध:
लेखक कहता है कि हमारी इच्छाशक्ति स्वयं हमारे लिए मार्ग बना देती है, इसलिए दूसरों का सहारा ढूँढना ठीक नहीं।

अंतिम उत्तर:
जो सच्चे मन से किसी लक्ष्य को पाना चाहता है, वह उसका रास्ता खोज ही लेता है।

10(iii). *अपठित गद्यांश:* कोई अपने दुर्भाग्य को कोस रहा है, कोई अपनी पारिवारिक दीनता को दोषी बता रहा है, कोई मार्गदर्शक के अभाव को अपनी असफलता का आधार मान रहा है - बहुत से असफल व्यक्ति इसी तरह अनेक कारणों को असफलता का आधार मानते हैं, विभिन्न कारणों की कल्पना कर हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं। वे अपने आप में कुछ कर नहीं पाते। वे समाज के लिए, संसार के लिए कुछ नहीं कर पाते। ऐसे मनुष्य को जीवन में कोई राह नहीं मिलती, कोई चारा नहीं दिखता। वे दूसरों से अपेक्षा करते हैं कि कोई उन्हें किसी लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग दिखाए, सफलता की सीढ़ी बताए, जिससे वे उस पर आसानी से चढ़ सकें। किन्तु ऐसे लोगों को यह भली-भाँति जानना चाहिए कि जहाँ चाह है, वहीं राह है। हमारी इच्छाशक्ति स्वयं हमारे लिए मार्ग बना देती है।

(iii) अच्छे कार्य के लिए किस चीज की आवश्यकता होती है?

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: गद्यांश से संकेत:
गद्यांश के अंत में कहा गया है कि जहाँ चाह है, वहीं राह है और हमारी इच्छाशक्ति स्वयं हमारे लिए मार्ग बना देती है।

अंतिम उत्तर:
अच्छे कार्य के लिए इच्छाशक्ति अर्थात दृढ़ चाह की आवश्यकता होती है।

11(a)(i). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: अनिल-अनल -

(A) हवा और आग

(B) आग और हवा

(C) आग और पवन

(D) हवा और पानी

Correct Answer: (A) हवा और आग

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
अनिल का अर्थ है हवा या वायु। जैसे: शीतल अनिल बह रही है।
अनल का अर्थ है आग या अग्नि। जैसे: वन में अनल भड़क उठी।
क्रम अनिल-अनल का है, अतः उत्तर हवा और आग होगा।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) हवा और आग: अनिल = हवा, अनल = आग। सही।
(B) आग और हवा: अर्थ सही हैं, पर क्रम उलटा है, इसलिए गलत।
(C) आग और पवन: पहला अर्थ आग है, जबकि अनिल का अर्थ हवा है। गलत।
(D) हवा और पानी: अनल का अर्थ पानी नहीं है, पानी के लिए अम्बु या नीर जैसे शब्द हैं। गलत।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) हवा और आग।

11(a)(ii). निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए: ग्रह-गृह -

(A) घर और संसार

(B) घर और परिवार

(C) पृथ्वी, मंगल और घर

(D) संसार और घर

Correct Answer: (C) पृथ्वी, मंगल और घर

Solution:

चरण 1: शब्दों के अर्थ:
ग्रह का अर्थ है आकाश का वह पिंड जो सूर्य की परिक्रमा करता है, जैसे: पृथ्वी, मंगल, बुध।

गृह का अर्थ है घर या मकान। जैसे: गृह-प्रवेश।
इस प्रकार ग्रह-गृह का उत्तर वह होगा जिसमें ग्रह के अर्थ के रूप में पृथ्वी, मंगल आदि और गृह के अर्थ के रूप में घर आए।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) घर और संसार: ग्रह का अर्थ घर नहीं है। गलत।
(B) घर और परिवार: दोनों अर्थ ग्रह-गृह से मेल नहीं खाते। गलत।
(C) पृथ्वी, मंगल और घर: ग्रह = पृथ्वी, मंगल आदि, गृह = घर। सही।
(D) संसार और घर: ग्रह का अर्थ संसार नहीं है। गलत।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (C) पृथ्वी, मंगल और घर।

11(b). निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **अंबुज**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'अंबुज' शब्द अंबु और ज से बना है। अंबु का अर्थ जल है और ज का अर्थ जन्मा हुआ है। यानी जो जल में उत्पन्न हो।

चरण 2: पहला अर्थ:
अंबुज का पहला अर्थ है कमल। जैसे: तालाब में अंबुज खिला है।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
अंबुज का दूसरा अर्थ है शंख, जो समुद्र के जल से उत्पन्न होता है। जैसे: मंदिर में अंबुज की ध्वनि गूँजी।

अंतिम उत्तर:
अंबुज के दो अर्थ: (1) कमल; (2) शंख।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **पक्ष**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'पक्ष' शब्द के कई अर्थ प्रचलित हैं। परीक्षा में इसके दो सही अर्थ लिखना पर्याप्त है।

चरण 2: पहला अर्थ:
पक्ष का पहला अर्थ है पखवाड़ा, यानी पंद्रह दिन का समय। जैसे: शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
पक्ष का दूसरा अर्थ है ओर, तरफ़ या समर्थन। जैसे: न्यायाधीश ने दोनों पक्षों की बात सुनी।

अंतिम उत्तर:
पक्ष के दो अर्थ: (1) पखवाड़ा (पंद्रह दिन); (2) ओर, तरफ़।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **मेघ**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'मेघ' शब्द का सबसे प्रचलित अर्थ बादल है। कोशों में इसके कुछ और अर्थ भी दिए

गए हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:
मेघ का पहला अर्थ है बादल, जो आकाश में पानी की भाप से बनता है। जैसे: आकाश में काले मेघ घिर आए।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
मेघ का दूसरा अर्थ है जल या पानी। जैसे: मेघ की बूँदों से धरती हरी हो गई।

अंतिम उत्तर:
मेघ के दो अर्थ: (1) बादल; (2) जल।

OR

निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो सही अर्थ लिखिए: **अरुण**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: शब्द को समझें:
'अरुण' शब्द का संबंध सूर्य और उसके प्रातः के रंग से है। इसी आधार पर इसके दो अर्थ मिलते हैं।

चरण 2: पहला अर्थ:
अरुण का पहला अर्थ है लाल रंग या सुबह की लालिमा। जैसे: पूर्व दिशा अरुण हो उठी।

चरण 3: दूसरा अर्थ:
अरुण का दूसरा अर्थ है सूर्य का सारथी। जैसे: अरुण सूर्य के रथ को हाँकता है।

अंतिम उत्तर:
अरुण के दो अर्थ: (1) लाल रंग; (2) सूर्य का सारथी।

11(c)(i). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: कम बोलने वाला -

(A) वादी

(B) मितभाषी

(C) बहुभाषी

(D) बकवादी

Correct Answer: (B) मितभाषी

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'कम बोलने वाला' के लिए एक शब्द चुनना है। इसमें मित यानी सीमित और भाषी यानी बोलने वाला, यह भाव होना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) वादी: दावा करने वाला व्यक्ति। यह कम बोलने वाला नहीं है, इसलिए गलत।
(B) मितभाषी: मित (थोड़ा, सीमित) + भाषी (बोलने वाला)। कम और नपा-तुला बोलने वाला मितभाषी है। यही सही है।
(C) बहुभाषी: बहुत भाषाएँ बोलने वाला, या बहुत बोलने वाला। यह उलटा भाव है।
(D) बकवादी: व्यर्थ की बातें करने वाला। यह भी अधिक बोलने से जुड़ा है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (B) मितभाषी

11(c)(ii). निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक सही शब्द का चयन करके लिखिए: जो बूढ़ा न हो -

(A) अजर

(B) अजिर

(C) अचिर

(D) अजीर

Correct Answer: (A) अजर

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
'जो बूढ़ा न हो' के लिए एक शब्द चुनना है। बुढ़ापे को जरा कहते हैं। जिसे जरा न सताए, वह अजर है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच:
(A) अजर: अ (नहीं) + जरा (बुढ़ापा)। जिसे कभी बुढ़ापा न आए, वह अजर है। यही सही है।
(B) अजिर: इसका अर्थ आँगन या प्रांगण है। बुढ़ापे से इसका संबंध नहीं है।
(C) अचिर: थोड़े समय का, क्षणिक। यह भी अलग अर्थ वाला शब्द है।
(D) अजीर: इस रूप में यह कोई मानक शब्द नहीं है। 'अजीर्ण' का अर्थ पाचन की गड़बड़ी है।

अंतिम उत्तर:
सही विकल्प (A) अजर

11(d)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: शिक्षक ने छात्र की प्रशंसा की।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: वाक्य की जाँच:
दिया गया वाक्य: शिक्षक ने छात्र की प्रशंसा की।
इसमें कर्ता 'शिक्षक', कर्म 'प्रशंसा' और क्रिया 'की' है।

चरण 2: नियम का मिलान:
'ने' वाले वाक्य में क्रिया कर्म के लिंग के अनुसार चलती है। 'प्रशंसा' स्त्रीलिंग है, इसलिए 'की' सही है। 'छात्र की प्रशंसा' में संबंध कारक 'की' भी ठीक है।
यहाँ कोई वर्तनी, लिंग या कारक की गलती नहीं है।

अंतिम उत्तर:
यह वाक्य पहले से शुद्ध है: शिक्षक ने छात्र की प्रशंसा की। (अशुद्ध रूप होता: प्रशंसा किया)

11(d)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: राजा दिलीप बहुत दयालू था।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य है: राजा दिलीप बहुत दयालू था।
इसमें 'दयालू' शब्द अशुद्ध लिखा गया है। यह वर्तनी (मात्रा) की अशुद्धि है।

चरण 2: शुद्ध वाक्य:
राजा दिलीप बहुत दयालु था।

चरण 3: नियम:
'दयालु' शब्द 'दया' में 'आलु' प्रत्यय जुड़ने से बना है। इस प्रत्यय में 'लु' ह्रस्व उकार

(ु) के साथ आता है। जैसे: कृपालु, शंकालु, ईर्ष्यालु। इसलिए 'लू' (दीर्घ ऊकार) लिखना गलत है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: राजा दिलीप बहुत दयालु था। अशुद्धि: वर्तनी की, दीर्घ 'ू' के स्थान पर ह्रस्व 'ु' आना चाहिए।

11(d)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: राजा घोड़े में सवार हो गया।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य: राजा घोड़े में सवार हो गया।
यहाँ 'में' का प्रयोग गलत है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:
सवारी करने वाला घोड़े के ऊपर बैठता है, उसके भीतर नहीं। इसलिए ऊपर के भाव के लिए 'पर' आता है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: राजा घोड़े पर सवार हो गया। (दोष: कारक-चिह्न)

11(d)(iv). निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए: यह बात शीला को पूछो।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: अशुद्धि की पहचान:
दिया गया वाक्य: यह बात शीला को पूछो।
यहाँ 'पूछना' क्रिया के साथ 'को' लगाया गया है, जो अनुचित है।

चरण 2: शुद्ध रूप और कारण:
जिससे प्रश्न किया जाता है, उसके साथ 'से' आता है: किसी से पूछना। 'को' का प्रयोग देने या कहने जैसे कामों में होता है।

अंतिम उत्तर:
शुद्ध वाक्य: यह बात शीला से पूछो। (दोष: कारक-चिह्न)

12(a). 'करुण' रस अथवा 'शृंगार' रस की परिभाषा देते हुए एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: किस रस का उत्तर:
यहाँ प्रश्न में पहले दिया गया रस, करुण रस, समझाया जा रहा है।

चरण 2: परिभाषा:
जब किसी प्रिय के बिछड़ने, मरने या संकट में पड़ने का वर्णन पढ़-सुनकर हृदय में शोक का भाव जागे और वह विभाव आदि से पुष्ट हो जाए, तो उसे करुण रस कहते हैं। शोक इसका स्थायी भाव है।

चरण 3: उदाहरण:
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥

चरण 4: उदाहरण में करुण रस:
लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम विलाप करते हैं। वे कहते हैं कि जैसे पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप और सूँड़ के बिना हाथी दीन हो जाता है, वैसा ही मेरा जीवन भाई के बिना है। यहाँ लक्ष्मण आलंबन हैं, उनकी मूर्च्छा उद्दीपन है और राम का विलाप अनुभाव है। दैन्य और विषाद संचारी भाव हैं। इनसे शोक स्थायी भाव पुष्ट होता है।

अंतिम उत्तर:
इन पंक्तियों में करुण रस है।

12(b). 'अनुप्रास' अलंकार अथवा 'संदेह' अलंकार का लक्षण और उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: किस अलंकार का उत्तर:
प्रश्न में पहले नाम आए अलंकार, अनुप्रास, को यहाँ लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
वर्णों की समानता से उत्पन्न ध्वनि-सौंदर्य को अनुप्रास कहते हैं। जब पंक्ति में कोई वर्ण एक से अधिक बार आए, तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। यह शब्दालंकार का एक प्रमुख भेद है।

चरण 3: उदाहरण:
तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए॥

चरण 4: उदाहरण में अनुप्रास:
इस पंक्ति में 'त' वर्ण की आवृत्ति तरनि, तनूजा, तट, तमाल और तरुवर में हुई है। यमुना (तरनि-तनूजा) के किनारे तमाल के वृक्षों के घने फैले होने का वर्णन है। 'त' के बार-बार आने से नाद-सौंदर्य बढ़ गया है।

अंतिम उत्तर:
इसमें वृत्त्यनुप्रास होने से अनुप्रास अलंकार है।

12(c). 'सोरठा' छन्द अथवा 'कुंडलिया' छन्द का लक्षण और एक उदाहरण लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
प्रश्न में सोरठा अथवा कुंडलिया में से किसी एक छन्द का लक्षण और उदाहरण लिखना है। यहाँ पहला छन्द 'सोरठा' लिखा गया है।

चरण 2: लक्षण:
सोरठा अर्द्धसम मात्रिक छन्द है और दोहे का उल्टा रूप है। इसके विषम चरणों (पहले और तीसरे) में 11-11 मात्राएँ और सम चरणों (दूसरे और चौथे) में 13-13 मात्राएँ होती हैं। कुल 48 मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों के अंत में तुक मिलती है।

चरण 3: उदाहरण (तुलसीदास, रामचरितमानस):
जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

चरण 4: जाँच:
'जो सुमिरत सिधि होइ' में 11 मात्राएँ हैं और 'गन नायक करिबर बदन' में 13 मात्राएँ हैं। दूसरी पंक्ति में भी क्रम 11 और 13 का है। पहले और तीसरे चरण के अंत में 'होइ' और 'सोइ' की तुक मिलती है।

अंतिम उत्तर:
सोरठा में 11 और 13 मात्राओं का क्रम होता है और यह दोहे का उल्टा है।

13. अपने मुहल्ले की समुचित सफाई हेतु नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
यह औपचारिक पत्र है जो नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को लिखा जाना है। पत्र में मुहल्ले की गंदगी की समस्या बतानी है और सफाई की व्यवस्था करने की माँग करनी है।

चरण 2: पत्र:
प्रेषक:
क ख ग
18, शास्त्री नगर,
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
दिनांक: 20 फरवरी, 2026

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय,
नगर निगम,
वाराणसी।

विषय: मुहल्ले की समुचित सफाई कराने हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं शास्त्री नगर मुहल्ले का निवासी हूँ। हमारे मुहल्ले में पिछले एक माह से सफाई कर्मचारी नियमित रूप से नहीं आ रहे हैं।
नालियाँ कूड़े से भरी हैं और उनका गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं, जिनसे बदबू फैल रही है। मच्छरों और मक्खियों के कारण

मलेरिया, डेंगू और पेट के रोग फैलने का भय है।
अतः आपसे प्रार्थना है कि मुहल्ले में प्रतिदिन झाड़ू लगवाने, नालियों की सफाई कराने और कूड़ा उठवाने की व्यवस्था करें। साथ ही मच्छर मारने की दवा का छिड़काव भी करवाएँ। इससे आपकी बड़ी कृपा होगी।

भवदीय,
क ख ग
निवासी, शास्त्री नगर, वाराणसी

चरण 3: ध्यान रखने योग्य बातें:
समस्या का वर्णन तथ्यों के साथ करें। भाषा शिष्ट रखें और अंत में समाधान की स्पष्ट माँग लिखें।

निष्कर्ष:
ऊपर स्वास्थ्य अधिकारी के नाम सफाई हेतु पूरा पत्र दिया गया है।

OR

स्व-रोजगार हेतु ऋण की माँग करते हुए बैंक के शाखा-प्रबन्धक को एक आवेदन-पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: प्रश्न को समझें:
स्व-रोजगार शुरू करने के लिए बैंक से ऋण माँगना है। इसलिए यह बैंक के शाखा-प्रबन्धक के नाम लिखा जाने वाला औपचारिक आवेदन-पत्र है। इसमें अपनी योग्यता, काम की योजना, राशि और चुकाने का आश्वासन बताना जरूरी है।

चरण 2: आवेदन-पत्र:
सेवा में,
शाखा-प्रबन्धक,

बैंक ऑफ बड़ौदा,
सदर बाजार शाखा, आगरा।

प्रेषक: क ख ग, 32, रामनगर, आगरा (उत्तर प्रदेश)
दिनांक: 18 जनवरी, 2026

विषय: स्व-रोजगार हेतु ऋण की माँग।

श्रीमान जी,
मैं आगरा का निवासी हूँ और मैंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। बहुत प्रयास के बाद भी मुझे कोई उचित नौकरी नहीं मिली। इसलिए मैंने अपना स्वयं का व्यवसाय करने का निश्चय किया है।
मेरी योजना गाँव के पास डेयरी और दूध-उत्पाद की एक छोटी इकाई लगाने की है। इसके लिए पशु, उपकरण और भवन-मरम्मत में लगभग चार लाख रुपये का खर्च आएगा। मेरे पास केवल पचास हजार रुपये की बचत है।
अतः मेरी प्रार्थना है कि स्वरोजगार योजना के अंतर्गत चार लाख रुपये का ऋण मुझे स्वीकृत किया जाए। मैं आवश्यक प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करूँगा और ऋण की किश्तें समय पर चुकाऊँगा।

प्रार्थी,
क ख ग

निष्कर्ष:
ऊपर बैंक-प्रबन्धक के नाम स्व-रोजगार ऋण का पूरा आवेदन-पत्र दिया गया है।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **युवाओं के निर्माण में पुस्तकालय का महत्त्व**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. युवा और राष्ट्र का भविष्य
3. ज्ञान और बौद्धिक विकास
4. चरित्र-निर्माण और आदर्श
5. कैरियर और प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायता
6. मोबाइल की लत से बचाव
7. सुझाव
8. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:

प्रस्तावना

युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति होते हैं। उनके विचार, चरित्र और कौशल से ही देश का भविष्य बनता है। युवाओं को सही दिशा देने में शिक्षा, परिवार और समाज के साथ पुस्तकालय की भी बड़ी भूमिका है। पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ बैठकर युवा अपने व्यक्तित्व को गढ़ता है।

युवा और राष्ट्र का भविष्य

जिस देश में युवाओं की संख्या अधिक होती है, उसके पास परिश्रम और नवीन विचारों की अपार पूँजी होती है। भारत ऐसा ही देश है। परन्तु यह पूँजी तभी काम आती है, जब युवा शिक्षित, संस्कारी और जागरूक हों। पुस्तकें इसी जागरूकता का आधार हैं।

ज्ञान और बौद्धिक विकास

पुस्तकालय में विज्ञान, साहित्य, इतिहास, गणित, कला और समाजशास्त्र की पुस्तकें एक साथ मिलती हैं। युवा अपनी रुचि के अनुसार पढ़कर ज्ञान का दायरा बढ़ाता है। इससे उसकी सोचने-समझने की शक्ति, तर्क और कल्पना का विकास होता है।

चरित्र-निर्माण और आदर्श

महापुरुषों की जीवनियाँ और आत्मकथाएँ पढ़कर युवा को त्याग, साहस, ईमानदारी और देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है। अच्छी पुस्तकें बुरी संगति से बचाती हैं और मन में सद्विचार भरती हैं। महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे अनेक महान

लोग पुस्तक-प्रेमी थे।

कैरियर और प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायता

आज प्रतियोगिता का युग है। सन्दर्भ-पुस्तकें, पुराने प्रश्न-पत्र, पत्रिकाएँ और समाचार-पत्र पुस्तकालय में एक ही जगह मिल जाते हैं। जो युवा महँगी पुस्तकें नहीं खरीद सकते, उनके लिए यह वरदान है। यहाँ शान्त वातावरण में की गई तैयारी सफलता की राह खोलती है।

मोबाइल की लत से बचाव

आज अधिकांश युवा मोबाइल और सोशल मीडिया में समय गँवा देते हैं। पुस्तकालय उन्हें अनुशासित दिनचर्या देता है और समय का सही उपयोग सिखाता है। वहाँ की एकाग्रता से ध्यान भटकाने वाली आदतें छूटती हैं।

सुझाव

सरकार को हर गाँव और कस्बे में सुसज्जित पुस्तकालय खोलने चाहिए। उनमें नई पुस्तकें, इण्टरनेट और बैठने की उचित व्यवस्था हो। विद्यालयों में पुस्तकालय का समय-सारणी में नियमित पीरियड रखा जाए। युवाओं को भी स्वयं आगे आकर सदस्य बनना चाहिए।

उपसंहार

पुस्तकालय युवाओं के लिए ज्ञान, चरित्र और सफलता की पाठशाला है। यदि हर युवा पुस्तकालय से जुड़ जाए, तो वह स्वयं भी आगे बढ़ेगा और राष्ट्र को भी उन्नति के शिखर पर ले जाएगा।

निष्कर्ष:

युवाओं के सर्वांगीण विकास, यानी बौद्धिक, नैतिक और व्यावसायिक विकास में पुस्तकालय अत्यन्त उपयोगी है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **परोपकार-सर्वोच्च भावना**

Correct Answer: —

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. परोपकार का अर्थ
3. प्रकृति में परोपकार
4. भारतीय परम्परा के उदाहरण
5. आज के जीवन में महत्त्व
6. परोपकार के लाभ और सावधानी
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: परोपकार-सर्वोच्च भावना:

प्रस्तावना

मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करने वाला सबसे बड़ा गुण दूसरों के दुख को अपना समझना है। अपने लिए तो पशु-पक्षी भी जीते हैं, पर जो दूसरों के हित के लिए जिए, वही सच्चा मनुष्य है। इसी भावना को परोपकार कहते हैं। इसीलिए इसे सर्वोच्च भावना माना गया है।

परोपकार का अर्थ

परोपकार शब्द 'पर' और 'उपकार' से बना है। इसका अर्थ है बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की भलाई करना। भूखे को भोजन देना, रोगी की सेवा करना, अनजान को रास्ता बताना और संकट में पड़े की सहायता करना, ये सब परोपकार के ही रूप हैं।

प्रकृति में परोपकार

प्रकृति हमें परोपकार का पहला पाठ पढ़ाती है। नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते, बादल अपने लिए नहीं बरसते और सूर्य बिना भेदभाव सबको प्रकाश देता है। रहीम ने कहा है:

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति सँचहिं सुजान॥

भारतीय परम्परा के उदाहरण

हमारे इतिहास में परोपकार के अनेक उदाहरण हैं। महर्षि दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी अस्थियाँ दान कर दीं, जिनसे वज्र बना। राजा शिबि ने शरण में आए कबूतर को बचाने के लिए अपने शरीर का मांस दे दिया। तुलसीदास जी कहते हैं:

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥

आज के जीवन में महत्त्व

आज के स्वार्थ भरे युग में परोपकार की आवश्यकता और बढ़ गई है। बाढ़, भूकम्प या महामारी जैसे संकट में जब लोग एक-दूसरे की सहायता के लिए आगे आते हैं, तब समाज की सच्ची शक्ति दिखती है। रक्तदान, नेत्रदान, निर्धन बच्चों को पढ़ाना और पेड़ लगाना भी परोपकार ही हैं।

परोपकार के लाभ और सावधानी

परोपकार से केवल पाने वाले का भला नहीं होता, करने वाले को भी सुख मिलता है। इससे मन में सन्तोष और आत्मबल बढ़ता है, समाज में प्रेम और भाईचारा फैलता है तथा स्वार्थ, ईर्ष्या और घृणा जैसे दोष दूर होते हैं। परोपकार दिखावे के लिए नहीं, सच्चे मन से होना चाहिए। दान करके उसका प्रचार करना परोपकार को छोटा कर देता है।

उपसंहार

परोपकार ही मानवता की पहचान है। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है: वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे। हमें अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिदिन किसी न किसी की भलाई करनी चाहिए। यदि सब लोग यह भावना अपना लें, तो समाज सुखी और सशक्त बनेगा।

निष्कर्ष:

परोपकार से व्यक्ति को शान्ति मिलती है और समाज को मजबूती, इसलिए यह सर्वोच्च भावना है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **भारत की वैज्ञानिक प्रगति**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. प्राचीन भारत में विज्ञान
3. स्वतन्त्रता के बाद की प्रगति

4. अन्तरिक्ष के क्षेत्र में सफलता
5. परमाणु शक्ति और रक्षा
6. कृषि, चिकित्सा और सूचना तकनीक
7. चुनौतियाँ और उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: भारत की वैज्ञानिक प्रगति:

प्रस्तावना

आज का युग विज्ञान का युग है। जो देश विज्ञान में आगे है, वही संसार में सम्मान पाता है। भारत ने प्राचीन काल से लेकर आज तक विज्ञान के क्षेत्र में अद्भुत उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जिन पर हर भारतवासी को गर्व है।

प्राचीन भारत में विज्ञान

प्राचीन भारत ज्ञान-विज्ञान का बड़ा केन्द्र था। भारत ने विश्व को शून्य और दशमलव प्रणाली दी। आर्यभट ने बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। चरक ने आयुर्वेद में और सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा में महान कार्य किया। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है। कणाद ने परमाणु का विचार दिया।

स्वतन्त्रता के बाद की प्रगति

1947 के बाद देश में अनेक शोध संस्थान, आई.आई.टी. और प्रयोगशालाएँ स्थापित की गईं। डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की और डॉ. विक्रम साराभाई ने अन्तरिक्ष कार्यक्रम की नींव रखी। सी.वी. रमन को 1930 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला।

अन्तरिक्ष के क्षेत्र में सफलता

इसरो की स्थापना 1969 में हुई। 1975 में भारत ने अपना पहला उपग्रह आर्यभट अन्तरिक्ष में भेजा। मंगलयान 2014 में पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचा। 2017 में एक ही रॉकेट से 104 उपग्रह छोड़े गए। अगस्त 2023 में चन्द्रयान-3 चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरा। आदित्य-एल1 मिशन सूर्य के अध्ययन के लिए भेजा गया।

परमाणु शक्ति और रक्षा

1974 और 1998 के पोखरण परीक्षणों से भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बना। अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलें देश की सुरक्षा को मजबूत करती हैं। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को मिसाइल कार्यक्रम के कारण मिसाइल मैन कहा जाता है।

कृषि, चिकित्सा और सूचना तकनीक

हरित क्रान्ति से भारत अनाज में आत्मनिर्भर हुआ और श्वेत क्रान्ति से दूध उत्पादन में आगे बढ़ा। चिकित्सा में भारत ने 2014 में पोलियो पर विजय पाई। कोरोना काल में स्वदेशी टीके बनाए गए और अनेक देशों को भेजे गए। सूचना तकनीक में यू.पी.आई. जैसी डिजिटल भुगतान व्यवस्था ने दुनिया का ध्यान खींचा।

चुनौतियाँ और उपसंहार

अभी भी हमारे यहाँ शोध पर खर्च कम है और प्रतिभाशाली वैज्ञानिक विदेश चले जाते हैं। यदि शोध को बढ़ावा मिले और विज्ञान की शिक्षा सुधरे, तो भारत और आगे बढ़ेगा। विज्ञान का उपयोग मानव कल्याण के लिए ही होना चाहिए। हमारी वैज्ञानिक प्रगति देश को विकसित राष्ट्र बनाने की ओर ले जा रही है।

निष्कर्ष:

प्राचीन ज्ञान से लेकर चन्द्रयान तक भारत की वैज्ञानिक यात्रा प्रेरणा देने वाली है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **इण्टरनेट की शैक्षिक उपयोगिता**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: निबन्ध की रूपरेखा:

1. प्रस्तावना
2. इण्टरनेट क्या है
3. शिक्षा में उपयोगिता
4. सरकारी प्रयास
5. कोरोना काल में भूमिका
6. हानियाँ और सावधानियाँ
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध: इण्टरनेट की शैक्षिक उपयोगिता:

प्रस्तावना

विज्ञान ने मनुष्य को जो अनेक वरदान दिए हैं, उनमें इण्टरनेट सबसे अनोखा है। इसने पूरी दुनिया को एक-दूसरे से जोड़ दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने क्रान्ति ला दी है। अब ज्ञान किसी एक कक्षा या पुस्तकालय तक सीमित नहीं रहा।

इण्टरनेट क्या है

इण्टरनेट दुनिया भर के कम्प्यूटरों और मोबाइल उपकरणों का एक विशाल जाल है। इसके द्वारा हम कुछ ही क्षणों में किसी भी विषय की जानकारी, चित्र, वीडियो और पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा में उपयोगिता

इण्टरनेट विद्यार्थियों के लिए ज्ञान का अथाह भण्डार है। किसी कठिन प्रश्न का हल, किसी शब्द का अर्थ या किसी घटना का इतिहास खोजना अब कुछ सेकण्ड का काम है। ई-पुस्तकें और ऑनलाइन पुस्तकालय पढ़ाई को सस्ता और सुलभ बनाते हैं। वीडियो पाठों से कठिन विषय भी आसानी से समझ में आ जाते हैं। शोध करने वाले विद्यार्थी देश-विदेश की सामग्री देख सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के आवेदन, प्रवेश-पत्र और परिणाम भी इण्टरनेट पर ही मिल जाते हैं। दूर-दराज के गाँवों के विद्यार्थी भी अच्छे शिक्षकों से पढ़ सकते हैं।

सरकारी प्रयास

सरकार ने शिक्षा को इण्टरनेट से जोड़ने के लिए दीक्षा, स्वयं, ई-पाठशाला और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे मंच शुरू किए हैं। इन पर निःशुल्क पाठ्य सामग्री और पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

कोरोना काल में भूमिका

जब महामारी के कारण स्कूल बन्द हो गए, तब इण्टरनेट ने ही पढ़ाई को रुकने नहीं दिया। ऑनलाइन कक्षाओं के सहारे करोड़ों विद्यार्थी अपने घर से पढ़ सके।

हानियाँ और सावधानियाँ

इण्टरनेट के कुछ दुष्परिणाम भी हैं। अधिक समय तक मोबाइल देखने से आँखें और पढ़ाई दोनों खराब होती हैं। गलत साइटों और सोशल मीडिया में समय नष्ट हो सकता है। इसलिए विद्यार्थियों को केवल पढ़ाई से जुड़ी सामग्री देखनी चाहिए, समय की सीमा तय करनी चाहिए और अपनी निजी जानकारी सुरक्षित रखनी चाहिए।

उपसंहार

इण्टरनेट शिक्षा का सशक्त साधन है, बशर्ते उसका सही उपयोग किया जाए। यदि विद्यार्थी इसे ज्ञान बढ़ाने का माध्यम बनाएँ और मर्यादा में रहकर उपयोग करें, तो यह उनके भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है।

निष्कर्ष:
सही उपयोग करने पर इण्टरनेट शिक्षा को सुलभ, सस्ती और रोचक बना देता है।

OR

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **नारी-जीवन का सामाजिक स्वरूप**

Correct Answer: –

Solution:

चरण 1: रूपरेखा:
1. प्रस्तावना
2. प्राचीन काल में नारी
3. मध्यकाल में पतन
4. आधुनिक नारी
5. आज की समस्याएँ
6. सुधार के उपाय
7. उपसंहार

चरण 2: निबन्ध:
प्रस्तावना
नारी समाज की आधारशिला है। वह माता, बहन, पत्नी और पुत्री के रूप में परिवार को जोड़ती है। जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में लिखा है: 'नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास-रजत-नग पगतल में।' समाज का स्वरूप बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उसमें नारी को कैसा स्थान मिला है।

प्राचीन काल में नारी
वैदिक युग में नारी को उच्च सम्मान प्राप्त था। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा और अपाला जैसी विदुषियों ने शास्त्रार्थ और ऋचाओं की रचना में भाग लिया। शिक्षा और विवाह में उसे अपनी बात कहने का अधिकार था। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' की

भावना उसी समय की देन है।

मध्यकाल में पतन

मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों और सामाजिक रूढ़ियों के कारण नारी की दशा बिगड़ती गई। पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, सती प्रथा और दहेज जैसी कुरीतियों ने उसे घर की चारदीवारी में बन्द कर दिया। शिक्षा से दूर रहने के कारण वह पुरुष पर निर्भर हो गई। मैथिलीशरण गुप्त की पंक्ति 'अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी' उस समय की पीड़ा बताती है।

आधुनिक नारी

राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और महात्मा गांधी जैसे समाज-सुधारकों ने नारी-उत्थान के लिए संघर्ष किया। स्वतंत्रता के बाद संविधान ने स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिए। आज नारी शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, सेना, खेल और प्रशासन में आगे है। इन्दिरा गांधी, कल्पना चावला, पी. वी. सिन्धु और मैरी कॉम जैसी महिलाओं ने देश का नाम ऊँचा किया।

आज की समस्याएँ

इतनी प्रगति के बाद भी नारी अनेक समस्याओं से घिरी है। दहेज-हत्या, कन्या-भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा और छेड़छाड़ की घटनाएँ आज भी होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा अधूरी रह जाती है। कामकाजी महिला को घर और दफ्तर की दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है, फिर भी उसे बराबर सम्मान और अवसर नहीं मिलते।

सुधार के उपाय

नारी की स्थिति सुधारने के लिए बालिका-शिक्षा पर विशेष बल देना होगा। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाओं को सच्चे मन से लागू करना चाहिए। कठोर कानूनों के साथ समाज की सोच भी बदलनी होगी। परिवार में बेटा और बेटी के बीच भेदभाव समाप्त करना सबसे पहला कदम है।

उपसंहार

नारी और पुरुष समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं। एक पहिया कमजोर हो तो रथ आगे

नहीं बढ़ सकता। जब नारी शिक्षित, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होगी, तभी समाज और राष्ट्र सही अर्थ में उन्नति करेगा।

निष्कर्ष:
निबन्ध में प्रस्तावना के बाद क्रम से प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल की स्थिति, फिर समस्याएँ और समाधान रखने से विषय का पूरा सामाजिक स्वरूप सामने आ जाता है।